NORTHERN INDIA
PATRIKA
WEDNESDAY, DECEMBER 20, 2006

The AU VC, Prof. R.G. Harshe releasing a book 'Ghalib-Diwan-e-na'at-o-Manqabat' on Tuesday.

Ghalib-Diwan-e-na'at-o-Manqabat relased

Ghalib did wonders in religious writings too: Prof Harshe

ALLAHABAD :" Mirza Ghalib who is known for love and beauty -based poems and couplets , had gifted priceless repository to generation in the form of Naat and religious rhymes " said vice chancellor of Allahabad university Prof RG Harshe while releasing the book Ghalib-Diwan-e-na'at-o-manqabat in a glittering function held at Vijainagram hall on Tuesday.

He said that though , he had not gone through the literature of Ghalib, but on the basis of interaction with eminent writer and poet Gulzar, it could be said that Ghalib not only did wonders in Urdu poetry but also made remarkable contribution in religious writings He further released the book title "Ghalib-Diwan-e-na'at-o-manqabat" written by Canada based NRI author and medical practitioner Dr. Syed Taqi Abedi .

The function was presided over by Prof. Shamsur Rehman Farooqi, Vice-Chairman, National Council for Promotion of Urdu language. Dr. Syed Taqi Abedi (Canada) who was chief guest on the occasion said that despite his medical profession , he tried to unveil the hidden facets of Mura Ghalib .

He further maintained that literature of the country act as bond for the person staying in other part of the globe . The guest of honour was Prof. N.R. Farooqi, Dean, College Development Council, and Prof. K.N. Yadav, Vice-Chancellor, UP Rajrashi Tandon Open University. Mr. Firdous A Wani, Registrar also released a book titled Shabda-E- Sakt.. He said that literature teaches us about the existing Ganaga-Jamuni tradition in the country .

अमर उजाला
बुधवार, 20 दिसंबर 2006

...कहते हैं कि गालिब का है अंदाजे बयां और

एनआरआई डॉ. आब्दी का पुस्तक का विमोचन

इलाहाबाद। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आरजी हर्षे ने कहा कि गालिब की गजल में वो मजहब है जो इंसान को इंसान से जोड़ता है।

प्रो. हर्षे मंगलवार को विजयनगरम हाल में अप्रवासी भारतीय डॉ. सैयद तकी आब्दी की पुस्तक 'गालिब : दीवाने नातो मनकाबत' के विमोचन के मौके पर बोल रहे थे। इस पुस्तक में गालिब के उन शेरों का संकलन है जिनमें उन्होंने खुदा के प्रति शुक्रिया अदा किया है। कुलपति ने कहा कि गालिब के शेर अमर हैं और हमेशा एक जैसे असरकारी हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे नेशनल काउंसिल फॉर प्रमोशन ऑफ उर्दू लैंग्वेज के उपाध्यक्ष प्रो. शम्सुर्रहमान फारुकी ने कहा कि यह गालिब के शेरों का ही असर है कि हर पढ़ने वाले को लगता है कि शेर उसी के हालात पर कहा गया है। इस मौके पर डीन कॉलेजेज प्रो. एनआर फारुकी, प्रो. राजेंद्र कुमार, प्रो. एक्यू फारुकी ने भी गालिब के शेरों पर विचार व्यक्त किए। रजिस्ट्रार फिरदौस वानी ने डॉ. आब्दी की एक अन्य पुस्तक 'सबद-ओ-सुखन' का विमोचन किया। यह पुस्तक उनके लेखों का संकलन है। कार्यक्रम के संचालक डॉ. फाजिल ए. हाशमी ने गालिब के कद को उनके ही शेर से बताने की कोशिश की.. 'हैं और भी दुनिया में सुखनवर बहुत अच्छे, कहते हैं कि गालिब का है अंदाजे बयां और।' धन्यवाद ज्ञापन रजिस्ट्रार श्री वानी ने किया।

हर रंग दिखेगा कला यात्रा में

आज वीसी करेंगे कला कुंभ का उद्घाटन

इलाहाबाद। विश्वविद्यालय डेलीगेसी की ओर से होने वाला वाला कला मेला बुधवार से शुरू हो रहा है। मेले के औपचारिक उद्घाटन से पहले सवेरे साढ़े नौ बजे वीसी प्रो.आरजी हर्षे कला यात्रा को सुभाष चौक पर हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। 'कला कुंभ' के नाम से होने वाले मेले का उद्घाटन एक बजे बजे वीसी डेलीगेसी में करेंगे।

चार दिन चलने वाले कला मेले में हिस्सा लेने के लिए देश के विभिन्न हिस्सों से प्रतिष्ठित और युवा कलाकार मंगलवार को ही पहुंच गए और डेलीगेसी परिसर कला के विविध रंगों में डूब गया।

कला मेले के पहले दिन अपराह्न डेढ़ बजे वीसी सुषमा अग्रवाल के चित्रों की प्रदर्शनी का उद्घाटन भी करेंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रम शाम सवा चार बजे से होंगे। इस मौके पर बरगद के कला अंक के विमोचन के साथ ही वरिष्ठ चित्रकार सतन कुमार चटर्जी का सम्मान भी किया जाएगा। सांस्कृतिक कार्यक्रम में कुमाऊं विश्वविद्यालय के छात्र सरस्वती वंदना और स्वागत गीत प्रस्तुत करेंगे। इसके बाद बिहार का लोकनृत्य 'रंग दे बसंती', नटी लोकनृत्य, नाटक 'आर्डर-आर्डर' की प्रस्तुति भी होंगी।

स्वयंसेवकों ने निकाली रैली

इलाहाबाद। इलाहाबाद विश्वविद्यालय की एनएसएस की इकाई संख्या आठ और 21 के दस दिवसीय शिविर के दौरान मंगलवार को स्वयंसेवकों ने स्वास्थ्य जागरूकता रैली निकाली।

रैली को एनएसएस की पूर्व समन्वयक डॉ.रमा सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस मौके पर उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ. [illegible] इस मौके पर डॉ. हसनैन अख्तर और डॉ. डीसी लाल भी मौजूद थे।

विश्वविद्यालय यूजीसी के आदेश को भूल ही गया

इलाहाबाद। सिगरेट और तंबाकू के उत्पादों का प्रचार-प्रसार रोकने और उनके व्यापार को नियंत्रित करने संबंधी कानूनों का इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रशासन अपने स्तर पर भले ही संज्ञान न ले लेकिन इस बारे में यूजीसी की ओर से जारी आदेश भी दो महीने में ही भूल गया। यही कारण है कि विश्वविद्यालय और सभी महाविद्यालयों के आसपास सिगरेट और तंबाकू के उत्पाद धड़ल्ले से बिक रहे हैं। चीफ प्रॉक्टर प्रो.जटाशंकर भी मानते हैं कि इसे लेकर कोई कदम नहीं उठाया गया लेकिन भविष्य में इसे अभियान के तौर पर लिया जाएगा।

बता दें कि एक मई-2004 से प्रभावी सिगरेट और अन्य तंबाकू उत्पाद अधिनियम के तहत ऐसे प्रावधान भी हैं जिसके अनुसार शिक्षण संस्थाओं के आसपास ऐसे उत्पादों की बिक्री ही नहीं उनके प्रचार-प्रसार को भी प्रतिबंधित किया गया है लेकिन कम ही शिक्षण संस्थान ऐसे होंगे जिन्होंने इस आदेश के अनुपालन के लिए सामान्य प्रयास भी किए हों। पिछले साल सर्वोच्च न्यायालय ने भी अपने एक आदेश में इस एक्ट के प्रावधानों को सख्ती से लागू करने के आदेश दिए थे।

परिसर के आसपास धड़ल्ले से बिक रही सिगरेट-तंबाकू

इसी क्रम में यूसीसी के संयुक्त सचिव डॉ.पी. प्रकाश ने इसी साल अक्तूबर में देश के सभी विश्वविद्यालयों, महाविद्यालय और डीम्ड विश्वविद्यालयों को पत्र लिखकर परिसर की सौ मीटर की परिधि के अंदर सिगरेट और तंबाकू उत्पादों की बिक्री पर रोक लगाने का आदेश दिया था। यूजीसी ने इस बारे में एक्ट के अधीन परिसर के बाहर प्रतिबंध संबंधी बोर्ड लगाने के आदेश दिए थे। इसका उल्लंघन करने पर दो सौ रुपये तक जुर्माने का प्रावधान है। यूजीसी ने यह भी निर्देश दिए थे कि इस बारे में शिक्षकों और कर्मचारियों को भी जागरूक किया जाए ताकि इस एक्ट का अनुपालन हो सके।

यूजीसी ने यह भी निर्देश दिया था कि एक्ट के अनुपालन के लिए तैनात शिक्षकों के नाम भी औपचारिक रूप से घोषित किए जाएं ताकि लोग इस बारे में जान सकें लेकिन विश्वविद्यालय समेत किसी भी महाविद्यालय ने इस बारे में कोई कदम नहीं उठाया। यही कारण है कि विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के आसपास सिगरेट और तंबाकू उत्पादों की बिक्री हो रही है। चीफ प्रॉक्टर प्रो.जटाशंकर बताते हैं कि यूजीसी का आदेश आने के बाद उन्होंने जिला प्रशासन को पत्र लिखा था ताकि वे एक्ट का पालन कराएं लेकिन इसके बाद इसे कभी अभियान के तौर पर नहीं लिया जा सका। हालांकि उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय जल्द ही अभियान चलाकर आसपास से ऐसी दुकानें हटवाएगा।

غالب شناسی' فارسی اشعار کے مطالعہ کے بغیر ناممکن

اردو یونیورسٹی میں ڈاکٹر سید تقی عابدی کا توسیعی لیکچر۔ "کلیات غالب فارسی" کی رسم اجراء

پروفیسر کے آر اقبال احمد پرووائس چانسلر مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی کے ہاتھوں ڈاکٹر تقی عابدی کی تصنیف "کلیات غالب فارسی" کی رسم اجراء عمل میں آئی۔ تصویر میں ڈاکٹر شجاعت علی راشد بھی دیکھے جاسکتے ہیں۔

حیدرآباد۔ 18 مارچ (پریس نوٹ) غالب شناسی غالب کے فارسی اشعار کے مطالعہ کے بغیر ممکن نہیں ہے۔ غالب ایک عظیم نعت گو شاعر بھی تھے۔ فارسی کلام "مثنوی ابر گہربار" میں شامل "معراج نامہ" کو نعت گوئی کا شاہکار قرار دیا جاسکتا ہے۔ ان خیالات کا اظہار ممتاز دانشور اور اسکالر ڈاکٹر سید تقی عابدی (کینیڈا) نے مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی میں آج "غالب ایک آفاقی شاعر" کے موضوع پر توسیعی لیکچر کے دوران کیا۔ مرکز برائے اردو زبان' ادب وثقافت کے زیر اہتمام کانفرنس ہال میں منعقدہ لیکچر کی صدارت پروفیسر کے آر اقبال احمد' پرووائس چانسلر وانچارج وائس چانسلر نے کی۔ اس موقع پر ڈاکٹر تقی عابدی کی تصنیف "کلیات غالب فارسی" کی رسم رونمائی بھی عمل میں آئی۔ ڈاکٹر تقی عابدی نے اپنے سیر حاصل لیکچر میں غالب کی فارسی شاعری کے ان پہلوؤں کو اجاگر کرنے کی کوشش کی جن سے اہل اردو بڑی حد تک ناآشنا ہیں۔ انہوں نے غالب کی فارسی شاعری کے اعلیٰ معیار اور گہرائی کا حوالہ دیتے ہوئے ریمارک کیا کہ یہ کتنی عجیب بات ہے کہ اس عظیم شاعر کی شہرت وشناخت اس کی شاعری کے ایک چھوٹے سے جز "دیوان غالب" (اردو) سے مربوط کردی گئی ہے۔ غالب شناسی چونکہ غالب کے فارسی اشعار کے مطالعہ کے بغیر ادھوری ہے' اپنے مطالعہ کو اردو شاعری تک محدود رکھتے ہوئے کیا ہم غالب کے ساتھ انصاف کررہے ہیں؟ ڈاکٹر تقی عابدی نے بتایا کہ غالب اکیڈیمی دہلی کی خواہش پر انہوں نے "کلیات غالب فارسی" مرتب کی ہے جو 11337 اشعار پر مشتمل ہے۔ 250 صفحات پر مشتمل ڈاکٹر عابدی کا تحریر کردہ مقدمہ بھی اس کتاب کا حصہ ہے۔ یہ ایک حقیقت ہے کہ غالب اور اقبال کا فارسی کلام ان کے اردو کلام سے زیادہ بلند ہے۔ یہی وجہ ہے کہ غالب نے خود اپنے اردو کلام کے کئی اشعار مسترد کردیئے تھے۔ غالب کو اپنی فارسی شاعری پر بجا طور پر فخر تھا۔ غالب سے پہلے فارسی اشعار کی سند ایرانی شعراء تھے۔ انہوں نے زبان دانی کے معاملے میں ایرانی شاعروں کی تقلید تو کی لیکن فکری طور پر اپنی ایک جداگانہ شناخت بنائی۔ فارسی کلام "مثنوی ابر گہربار" میں شامل معراج نامہ 281 اشعار پر مشتمل ہے جو نعتیہ شاعری میں کسی شاہکار سے کم نہیں۔ ممتاز اسکالر نے جو دیار مغرب میں اردو کی شمع روشن کیے ہوئے ہیں' لیکچر کے ابتدا میں کہا کہ مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی کی ساری دنیا میں دھوم ہے۔ انہوں نے کہا کہ اردو تہذیب کو عصری تقاضوں سے ہم آہنگ کرنا ایک بڑا چیلنج ہے جس سے پروفیسر اے ایم پٹھان اور ان کے ساتھی نہایت خوش اسلوبی سے نمٹ رہے ہیں۔ ڈاکٹر سید تقی عابدی نے لیکچر کے اختتام پر شرکاء کے سوالات کے اطمینان بخش جواب بھی دیے۔ پروفیسر کے آر اقبال احمد نے اپنی صدارتی تقریر میں غالب کے فارسی کلام کو یکجا کرنے کی ضرورت ظاہر کی اور کہا کہ برصغیر کی فارسی نگاری کے ارتقا میں غالب کا ایک خاص مقام ہے۔ انہوں نے ڈاکٹر سید تقی عابدی کی تصنیف "کلیات غالب فارسی" کو غالبیات میں ایک اہم اضافہ قرار دیا۔ ابتدا میں پروفیسر ٹی وی کٹی منی' ڈین اسکول آف لینگویجز نے خیر مقدم کیا۔ ڈاکٹر شجاعت علی راشد' انچارج ڈائرکٹر مرکز برائے اردو زبان نے کارروائی چلائی اور شکریہ ادا کیا۔ اس موقع پر ڈاکٹر ایس اے وہاب' انچارج رجسٹرار' سی ایم ایشوریا' فینانس آفیسر' پروفیسر ایس رحمت اللہ' پروفیسر خدیجہ بیگم' پروفیسر خالد سعید' پروفیسر ریحانہ سلطانہ' پروفیسر فاطمہ بیگم' پروفیسر آمنہ کشور' ڈاکٹر عباس خان' ڈاکٹر شاہدہ' ڈاکٹر نکہت جہاں' ڈاکٹر ابوالکلام' مہیش کمار دیرائی' ڈاکٹر عصمت جہاں' ڈاکٹر طارق مسعودی' ڈاکٹر محمود عالم' جنید ذاکر' ڈاکٹر شاہد نوخیز اور دوسرے موجود تھے۔

منصف

19 MAR 2009

رسم الخط کی تبدیلی سے اردو کے معدوم ہو جانے کا اندیشہ

نئی نسل کو اردو سکھانے میں اس کی بقا مضمر، مولانا آزاد یونیورسٹی میں ڈاکٹر تقی عابدی کا توسیعی لیکچر

[illegible]

اُردو زبان، تہذیب وثقافت کا عظیم خزانہ

مولانا آزاد یونیورسٹی میں ''غالب شاعر زیست'' سیمینار، ڈاکٹر سی نارائن ریڈی اور دوسروں کا خطاب

حیدرآباد۔ 27 دسمبر (پریس نوٹ) ڈاکٹر سی نارائن ریڈی سابق وائس چانسلر تلگو یونیورسٹی نے کہا کہ ہمیں اپنی شناخت کی برقراری کیلئے اپنی زبان کو زندہ رکھنا ہوگا۔ اردو زبان تہذیب وثقافت کا عظیم خزانہ ہے۔ مرزا غالب کے گذرنے کے اتنے برسوں کے باوجود وہ اپنی شاعری کے ذریعہ ہمیشہ زندہ ہیں۔ اس لئے وہ مرزا غالب کو خراج عقیدت پیش کرنے کے بجائے خراج تحسین پیش کررہے ہیں۔ ڈاکٹر سی نارائن ریڈی نے آج مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی میں مرزا غالب کے 210ویں یوم ولادت کے موقع پر ''غالب شاعر زیست'' کے عنوان پر ایک روزہ بین الاقوامی سمینار سے خطاب کرتے ہوئے یہ بات بتائی۔ جس کی صدارت پروفیسر اے ایم پٹھان وائس چانسلر مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی نے کی۔ ڈاکٹر سی نارائن ریڈی نے کہا کہ ہندوستانی زبانیں آج عجیب ماحول سے دوچار ہیں۔ ہندوستانیوں نے ضرور آزادی حاصل کرلی لیکن یہ آزادی صرف سیاسی آزادی ہے۔ تہذیب وتمدن زبان اور ادب کے زمرے میں ابھی آزادی نہیں ملی۔ ابھی بھی ہم انگریزی کے آنچل سے بندھے ہیں۔ ڈاکٹر سی نارائن ریڈی نے مرزا غالب کو خراج پیش کرتے ہوئے کہا کہ اس دور کے شعراء شاہی درباروں میں تعریفوں کے پل باندھتے نظر آتے تھے لیکن غالب اس سے دور تھے۔ ان کا اپنا گھر بھی نہیں تھا لیکن وہ تمام اردو والوں کے دلوں میں رہتے ہیں۔ پروفیسر اے ایم پٹھان وائس چانسلر مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی نے اس موقع پر ڈاکٹر سید تقی عابدی (کینیڈا) کی جانب سے تیار کردہ ''غالب دیوان نعت ومنقبت'' کی رسم اجراء انجام دی اور اپنے صدارتی خطاب میں کہا کہ اردو یونیورسٹی میں لکچرس کے علاوہ پہلی مرتبہ سمینار منعقد کیا جارہا ہے جو مرزا غالب کی 210ویں ولادت کے موقع پر انہیں خراج ہے۔ اس موقع پر انہوں نے مؤلف ''غالب دیوان نعت ومنقبت'' سے اپیل کی کہ ان کے پاس اضافی قلمی مخطوطات ہوں تو وہ اسے اردو یونیورسٹی کے میوزیم کو عطیہ دیں۔ ڈاکٹر سید تقی عابدی نے اس کے جواب میں اعلان کیا کہ ان کے پاس مخطوطات کے اگر اضافی نسخے ہوں تو وہ اسے اردو یونیورسٹی کو عطیہ کردیں گے۔ انہوں نے بتایا کہ ٹورنٹو (کینیڈا) میں ان کی شخصی لائبریری میں تقریباً 15 ہزار کتب اور 2 ہزار سے زائد قلمی مخطوطات موجود ہیں اور ان کی وصیت کے مطابق ان کے مرنے کے 12 گھنٹوں کے اندر ساری کتابیں اور مخطوطات ٹورنٹو لائبریری کو منتقل کردی جائیں گی۔ ڈاکٹر تقی عابدی نے ڈاکٹر سی نارائن ریڈی کی اردو سے وابستگی پر تبصرہ کرتے ہوئے کہا کہ اردو کسی مذہب کی زبان نہیں ہے بلکہ یہ ہر غیر کی زبان ہے اسے مذہب کے خانوں میں تقسیم نہیں کیا جاسکتا۔ ابتداء میں پروفیسر ایس اے وہاب قیصر کنٹرولر امتحانات یونیورسٹی نے خیر مقدمی تقریر کی اور مہمان ڈاکٹر سی نارائن ریڈی کا تعارف کروایا۔ تقریب میں پروفیسر قمر رئیس نائب صدر نشین دہلی اردو اکیڈیمی، جناب طالب خوندمیری، ڈاکٹر ریحانہ سلطانہ، ڈاکٹر فاطمہ پروین، ڈاکٹر مسرت جہاں، جناب رحیم الدین کمال کے علاوہ اساتذہ اور طلبہ کی کثیر تعداد موجود تھی۔

پروفیسر اے ایم پٹھان وائس چانسلر مولانا آزاد نیشنل اردو یونیورسٹی ڈاکٹر سید تقی عابدی (کینیڈا) کی تالیف کردہ غالب دیوان نعت ومنقبت کی رسم اجراء انجام دیتے ہوئے۔ تصویر میں مؤلف کتاب کے علاوہ گیان پیٹھ ایوارڈ یافتہ ڈاکٹر سی نارائن ریڈی بھی دیکھے جاسکتے ہیں۔

شعر و سخن

Dr. Taqi Abedi in Tehran

''تہران میں ڈاکٹر تقی عابدی کی علمی اور ادبی خدمات کا اعتراف''

سازمان فرہنگ اور ارتباطات کے عالمانہ جلسہ کی مختصر روداد

(خصوصی رپورٹ)

تہران ۱۷ اگست شام کے چھ بجے سازمان فرہنگ اور ارتباطات کی جانب سے، سازمان کے کانفرس ہال میں ایک خوبصورت علمی محفل ڈاکٹر سید تقی عابدی کی علمی اور ادبی خدمات کے اعتراف میں برگزار کی گئی جس میں سب سے پہلے سازمان فرہنگ اور ارتباطات کے ڈائرکٹر جنرل ڈاکٹر سلیمانی نے مہمانوں کو خوش آمدید کہتے ہوئے تفصیل سے ڈاکٹر عابدی کی فارسی ادبی خدمات خصوصی طور پر کلیات غالب فارسی اور ان کے توسط سے فارسی شعر و ادب کا برصغیر میں تعارف کا تذکرہ کیا۔ ڈاکٹر سلیمانی نے ہندو پاک اور ایران کا علمی، تہذیبی اور ثقافتی رشتہ جو فارسی ادبیات کے ذریعہ صدیوں سے جوڑا ہے محکم اور غیر فانی بتایا۔

ڈاکٹر حسن ہائری ماہر غالبیات نے غالب کی شخصیت اور فارسی شاعری پر بھرپور گفتگو کی موصوف نے ڈاکٹر عابدی کی مرتبہ کلیات غالب فارسی اور اس کے مقدمہ پر بھی سیر حاصل بات چیت کر کے کلیات کو غالب شناسی کا سنگ میل قرار دیا۔ اس علمی محفل میں یونیورسٹی کے اساتذہ، شعرا، ادیب اور بڑی علمی شخصیات کے علاوہ ڈاکٹر حسین مظفری، ڈاکٹر نجفی، ڈاکٹر زراعی، ڈاکٹر حسن مظفری وغیرہ شامل تھے۔

اس تقریب کا کلیدی خطبہ ڈاکٹر تقی عابدی نے فارسی میں دیا، اور انھوں نے کوئی پون گھنٹے تک غالب کی فارسی شاعری کے مختصر گوشوں پر دلچسپ اور خوبصورت گفتگو کی جو پسند کی گئی۔ اس تقریب کے دوران کلیات فارسی کی رونمائی ہندو پاک کے سفیروں نے انجام دی۔ یہ خوبصورت محفل افطار کی ضیافت پر ختم ہوئی۔

Sherosokhan

تہران میں ڈاکٹر تقی عابدی کی کلیات غالب فارسی کی تقاریب

''سازمان فرہنگ و ہنر کے جلسہ میں سفیر بھارت اور پاکستان نے کتاب کی رونمائی کی''

(خصوصی رپورٹ)

تہران کی معروف پبلشر کے کمپنی چیرمین ڈاکٹر امیری نے ڈاکٹر سید تقی عابدی مقیم کینیڈا کی تحقیق، تدوین اور مرتبہ شاہکار کتاب ''کلیات غالب فارسی'' کو ایران میں پہلی بار بڑی تعداد میں شائع کیا۔ ڈاکٹر تقی عابدی کی مرتبہ کلیات غالب فارسی کو ۲۰۰۸ میں غالب انسٹی ٹیوٹ دہلی نے بڑے خاص طریقہ پر شائع کیا ہے۔ اس کلیات میں تقی عابدی کا غالب کی فارسی شاعری پر بسیط اُردو مقدمہ بھی شامل ہے۔ امیری پبلشر نے کلیات میں موجود مقدمہ اور دوسری اُردو تحریروں کو فارسی میں ترجمہ کر کے کلیات غالب ایک ہی جلد کے (۹۰۰) صفحات پر بڑے دیدہ زیب طریقہ پر شائع کیا ہے۔ اس کتاب کی رونمائی وزارت فرہنگ و ہنر کی سرپرستی میں پاکستان اور بھارت کے سفیروں نے انجام دی۔ ایران میں موجود ماہر غالبیات استاد محمد حسن ہائری جن کی دو کتابیں دیوان غزلیات غالب اور سومنات خیال (قصائد غالب) منظر عام پر آچکیں ہیں، ڈاکٹر عابدی کی تدوینی کلیات فارسی اور اس کے بسیط مقدمہ پر گفتگو کرتے ہوئے کہا کہ اس عظیم اور عمدہ کام سے غالب شناسی کی راہیں مکمل طور پر کھل چکیں ہیں۔ مقدمہ میں ڈاکٹر عابدی نے غالب کے کلام اور فن کے ہر زاویہ پر روشنی ڈالی ہے۔ انھوں نے اس کتاب کو غالب کی فارسی شاعری کی تفہیم کا سنگ میل قرار دیا۔ ڈاکٹر ہائری نے اپنی عالمانہ گفتگو میں غالب دہلوی کی شخصیت اور شاعری پر بھی عمدہ مقالہ پڑھا جسے بہت سراہا گیا۔

INTERNATIONAL LAW ASSOCIATES

We provide prompt and success oriented immigration solutions to all your family, business and employement, settlement in U.S and Canada.

FAMILY IMMIGRATION:

AFFIDAVIT OF SUPPORT I-864 SPONSORSHIP FOR FAMILY PETITIONS. NATIONAL VISA CENTER.(NVC) CONSULAR PROCESSING FOR VISA INTERVIEWS IN U.S EMBASSY ISLAMABAD PAKISTANAVAILABLE,WITH FULL DOCUMENTATION. WE ARE HAVING THE HIGHEST NUMBER'S OF IMMIGRA CASES PROCESSED BY NVC FOR PAKISTAN AT THE US EMBASSY, ISLAMABAD

EMPLOYMENT BASED IMMIGRATION:

SPONSORS for Employment, Skilled and Highly Educated, Work Authorization, Labor Certification under PERM I-1,HIB, E-2, H2, Seasonal Workers, J-1 and F-1 Student visas are processed.

We provide stoppage of Removal and Deportation from Immigration Courts. Divorce cases, Domestic Violence and child custody cases are effectively handled.

For further details contact:
INTERNATIONAL LAW ASSOCIATES
167-15 HILLSIDE AVE JAMAICA,NY 11432
PH: 718-739-5744, 718-974-8281, 718-739-3006, 718-526-8258
FAX: 718-739-0690, E-MAIL:mrah8@aol.com

HAJJ package 2011

WE HAVE COMPILED DIFFERENT PACKAGES TO FIT YOUR SCHEDULE AND BUDGET

Starting from $4990 Quard Occupancy

YOUR TRAVEL PARTNER FOR OVER 25 YEARS.

CONSOLIDATORS FOR OVER 120 AIRLINES.

پاکستان، انڈیا، بنگلہ دیش اور یورپ کیلئے کنفرم سیٹیں اور سستے رینٹس

VISA SERVICE ALSO AVAILABLE

FOR LOWEST FARES TO PAKISTAN, BANGLADESH, INDIA, EUROPE MIDDLE EAST AND around the globe.

Economy UMRAH Package 2011 Starting from $ 275 PP and up including VISA

Special Business class fare for ANYWHERE IN THE WORLD.

اعلیٰ سروسز اور گارنٹیڈ کنفرم سیٹیں

PIA Emirates Qatar Airways Delta Swissair

WORLDWIDE TRAVEL INC.
(CONSOLIDATOR OF MAJOR AIRLINES)
Over 34 Years of Experience

LOWEST AIRFARES TO
PAKISTAN
Starting From : $799
(Taxes and Surcharge Extra.)
Call Us:
RESERVATION CENTER

musawat@brain.net.pk www.dailymusawaat.com

MEMBER APNS

لاہور، فیصل آباد، کوئٹہ، راولپنڈی، اسلام آباد سے بیک وقت شائع ہونیوالا کثیر الاشاعت اخبار قائم شدہ 1970

Daily Musawaat LRL53

عوام کا اپنا اخبار بانی ذوالفقار علی بھٹو شہید

روزنامہ

مساوات

لاہور

چیف ایڈیٹر: سجاد بخاری

جلد نمبر 38 | منگل 16 دسمبر 2008، 17 ذوالحج 1430ھ 3 پوہ 2065ب | قیمت 7 روپے بذریعہ ہوائی ڈاک 8 روپے | شمارہ نمبر 323

اردو زبان و ادب عالمی تناظر میں کے عنوان سے منعقدہ سیمینار میں ڈاکٹر عبدالکریم خالد خطاب کر رہے ہیں جبکہ ڈاکٹر سید شبیہ الحسن اور ڈاکٹر تقی عابدی اسٹیج پر بیٹھے ہیں (فوٹو خوشنود)

پاکستان میں اردو کو قومی اور سرکاری زبان کا درجہ دیا جائے: تقی عابدی

ڈاکٹر سید تقی عابدی کا اردو زبان و ادب پر خصوصی لیکچر، صدارت سید شبیہ الحسن نے کی

لاہور (ایجوکیشن رپورٹر) شعبہ اردو یونیورسٹی آف ایجوکیشن لوئر مال کیمپس لاہور کے زیر اہتمام کینیڈا سے تشریف لائے ہوئے معروف محقق اور نقاد ڈاکٹر سید تقی عابدی کے خصوصی لیکچر کا اہتمام کیا گیا اس موقع پر منعقدہ تقریب کی صدارت ممتاز محقق اور نقاد ڈاکٹر سید شبیہ الحسن نے کی۔ ماہر لسانیات، محقق اور نقاد اور صدر شعبہ اردو ڈاکٹر عبدالکریم خالد نے مہمان خصوصی کا تعارف کراتے ہوئے کہا کہ ڈاکٹر سید تقی عابدی نے اردو کے مراکز سے دور بیٹھ کر تحقیق و تنقید کا جو کام تمام انجام دیا ہے وہ ادارے بھی مل کر نہیں کر سکتے اور ان کی کتابیں سے زیادہ ان کی زبانت کی عکاس ہیں۔ ڈاکٹر سید تقی عابدی نے "اردو زبان ادب بین الاقوامی تناظر میں" کے موضوع پر خطاب کرتے ہوئے پاکستان سے باہر اردو زبان و ادب کی تازہ تیرین صورتحال پر روشنی ڈالی۔ انہوں نے کہا کہ اردو کے مقابلے میں ہندی زبان زیادہ تیزی سے ترقی کر رہی ہے۔ اگر ہم نے پاکستان میں اردو کو ایک قومی اور سرکاری زبان کے طور پر قبول نہ کیا تو پھر پاکستان سے باہر بھی اردو بولنے والا نہیں ملے گا۔ ڈاکٹر سید شبیہ الحسن اپنے صدارتی خطاب میں موضوع کی اہمیت پر روشنی ڈالی اور اردو زبان و ادب کے طالب علموں پر زور دیا کہ وہ اردو زبان کو ہر سطح پر رائج کرنے کے لیے اسے درست طور پر سیکھیں اور اس کے فروغ کیلئے اپنی بہترین صلاحیتیں صرف کریں۔

Daily
SAMA
روزنامہ سما لاہور
جلد2 | ہفتہ 14 ربیع الثانی 1430ھ 11 اپریل 2009ء 30 چیت 2065 ب | صفحات 6 | قیمت 5 روپے | شمارہ 98
فون: 042-7532340, 042-7532325-7 فیکس: 042-7532309

مرزا سلامت علی دبیر کی یاد میں منعقدہ انٹرنیشنل سیمینار میں ڈاکٹر سید شبیہ الحسن، ڈاکٹر تقی عابدی، ڈاکٹر سلیم اختر اور امجد اسلام امجد موجود ہیں

مرزا سلامت علی دبیر کی شخصیت کے حوالے سے انٹرنیشنل سیمینار کا انعقاد

دبیر کا مقام انیس سے بھی بلند ہے، جسے عصر حاضر میں فراموش کر دیا گیا، سید شبیہ الحسن

لاہور (نیوز رپورٹر) عالمی مجلس ادب پاکستان اور پبلک لٹریری سوسائٹی کی جانب سے گزشتہ روز مرزا سلامت علی دبیر کی شخصیت اور فن کے حوالے سے ایک یادگار انٹرنیشنل سیمینار کا اہتمام کیا گیا جس کی صدارت ڈاکٹر سلیم اختر نے کی جبکہ اسلام امجد مہمان خصوصی تھے۔ کینیڈا سے معروف محقق اور نقاد ڈاکٹر تقی عابدی اور امریکہ سے وکیل انصاری خصوصی طور پر تشریف لائے تھے۔ عالمی مجلس ادب کے چیئرمین ڈاکٹر سید شبیہ الحسن نے کہا کہ عصر حاضر میں ہم نے دبیر اس تخلیق کار کو فراموش کر دیا ہے جو شعر و ادب کا اہم ترین ستون رہا ہے۔ انہوں نے کہا کہ دبیر کا مقام انیس سے بھی بلند ہے کہ انہوں نے شعر و ادب کی مختلف اصناف میں طبع آزمائی کی ہے۔ ڈاکٹر عبدالکریم خالد نے افتتاحی کلمات میں کہا کہ دبیر فہمی کی آج بے حد ضرورت ہے کیونکہ ہم اپنی حقیقی تہذیب و ثقافت سے دور ہوتے جا رہے ہیں۔ امجد اسلام امجد نے کہا کہ آج دبیر شناسی کی زیادہ ضرورت ہے اور تقی عابدی نے مرزا دبیر کے حوالے سے جو کام کیا ہے وہ لائق صد تحسین ہے۔ وکیل انصاری نے کہا کہ پوری دنیا میں اردو بولنے والوں کی تعداد کم ہوتی جا رہی ہے، لہٰذا اردو کی حقیقی تفہیم کے لئے بھی ہمیں دبیر کے کلام سے کماحقہ استفادہ کرنا چاہئے۔ ڈاکٹر تقی عابدی نے کہا کہ دبیر اردو زبان کا ایک بہت بڑا شاعر ہے اور اس کی ہر جہت قابل قدر اور لائق مطالعہ ہے۔ انہوں نے دبیر کی رباعیات کے حوالے سے بعض اہم نکات پر روشنی ڈالی۔

فن اور فنکار

جمعہ 27 ذوالحجہ 1429ھ 26 دسمبر 2008ء 12 پوہ 2065 ب

(نوائے وقت)

میرزا سلامت علی دبیر کی یاد میں منعقدہ انٹرنیشنل سیمینار میں ڈاکٹر شبیہ الحسن، ڈاکٹر تقی عابدی، ڈاکٹر سلیم اختر اور امجد اسلام امجد موجود ہیں

اردو کی حقیقی تفہیم کیلئے دبیر کے کلام سے استفادہ کرنا ہوگا

میرزا سلامت علی دبیر کی یاد میں انٹرنیشنل سیمینار اور کتاب کی تقریب رونمائی سے مقررین کا خطاب

لاہور (پ ر) عالمی مجلس ادب پاکستان اور پیک لٹریری سوسائٹی کی جانب سے گزشتہ روز میرزا سلامت علی دبیر کی شخصیت اور فن کے حوالے سے ایک یادگار انٹرنیشنل سیمینار کا اہتمام کیا گیا جس کی صدارت ڈاکٹر سلیم اختر نے کی جبکہ امجد اسلام امجد مہمان خصوصی تھے۔ کینیڈا سے معروف محقق اور نقاد ڈاکٹر تقی عابدی اور امریکہ سے وکیل انصاری نے خصوصی طور پر شرکت کی۔ عالمی مجلس ادب کے چیئرمین ڈاکٹر سید شبیہ الحسن نے کہا کہ دبیر کا مقام انیس سے بھی بلند ہے کہ انہوں نے شعر و ادب کی مختلف اصناف میں طبع آزمائی کی ہے۔ ڈاکٹر عبدالکریم خالد نے افتتاحی کلمات میں کہا کہ دبیر فہمی کی آج بے حد ضرورت ہے۔ امجد اسلام امجد نے کہا کہ تقی عابدی نے میرزا دبیر کے حوالے جو کام کیا ہے وہ لائق صد تحسین ہے۔ وکیل انصاری نے کہا کہ اردو کی حقیقی تفہیم کیلئے بھی ہمیں دبیر کے کلام سے کما حقہ استفادہ کرنا چاہئے۔ ڈاکٹر تقی عابدی نے کہا کہ دبیر اردو زبان کا ایک بہت بڑا شاعر ہے اور اس کی ہر جہت قابل قدر اور لائق مطالعہ ہے۔ اس موقع پر ان کی دبیر شناسی کے حوالے سے ساتویں کتاب "دبیر کی رباعیات" کا تعارف بھی ڈاکٹر سلیم اختر نے پیش کیا گیا۔ تقریب کے صدر ڈاکٹر سلیم اختر نے کہا کہ دبیر کے مقام و مرتبے کو شبلی نعمانی کی تنقید نے کمزور کیا۔ جب کہ ڈاکٹر تقی عابدی نے دبیر فہمی اور دبیر شناسی کا حق ادا کر دیا ہے۔ پروفیسر آصف ولو، ڈاکٹر نعیم اور اسد بخاری نے مرزا دبیر کی شخصیت اور فن کے حوالے سے گفتگو کی۔

ادبی منظرنامہ

طاس

روزنامہ نوائے وقت (19/12/08)

ڈاکٹر عبدالکریم خالد، تقی عابدی اور شبیہ الحسن

ڈاکٹر تقی عابدی کا خصوصی لیکچر

شعبہ اردو یونیورسٹی آف ایجوکیشن لوئر مال کیمپس لاہور کے زیر اہتمام کینیڈا سے تشریف لائے ہوئے معروف محقق اور نقاد ڈاکٹر تقی عابدی کے خصوصی لیکچر کا اہتمام کیا گیا۔ صدارت ممتاز محقق اور نقاد ڈاکٹر شبیہ الحسن نے کی۔ ماہر لسانیات محقق اور نقاد اور صدر شعبہ اُردو ڈاکٹر عبدالکریم خالد نے مہمان خصوصی کا تعارف کراتے ہوئے کہا کہ ڈاکٹر تقی عابدی نے اُردو کے مراکز سے دور بیٹھ کر تحقیق و تنقید کا جو کام تنہا سرانجام دیا ہے وہ ادارے بھی مل کر نہیں کر سکتے اور ان کی تیس سے زیادہ کتب ان کی ذہانت کی عکاس ہیں۔ ڈاکٹر تقی عابدی نے "اُردو زبان و ادب۔ بین الاقوامی تناظر میں" کے موضوع پر خطاب کرتے ہوئے پاکستان سے باہر اُردو زبان و ادب کی تازہ ترین صورتحال پر روشنی ڈالی۔ انہوں نے کہا کہ اُردو کے مقابلے میں ہندی زبان زیادہ تیزی سے ترقی کر رہی ہے۔ اگر ہم نے پاکستان میں اُردو کو ایک قومی اور سرکاری زبان کے طور پر قبول نہ کیا تو پھر پاکستان سے باہر بھی اُردو بولنے والا نہیں ملے گا۔

روزنامہ
Daily ASAS
اساس
لاہور
ایڈیٹر انچیف
شیخ افتخار عادل
لاہور، راولپنڈی، اسلام آباد، کراچی، فیصل آباد اور مظفر آباد آزاد کشمیر سے بیک وقت شائع ہوتا ہے
جلد 12 شمارہ 141 جمعرات 26 ذوالحج 1429ھ 25 دسمبر 2008ء 12 پوہ 2065 ب

مرزا اسلامت علی دبیر کی یاد میں منعقدہ انٹرنیشنل سیمینار میں ڈاکٹر شبیہ الحسن، ڈاکٹر تقی عابدی، ڈاکٹر سلیم اختر اور امجد اسلام امجد کھڑے ہیں

لاہور: مرزا اسلامت علی دبیر کی یاد میں انٹرنیشنل سیمینار کا انعقاد

عصر حاضر میں ہم نے ہر اس تخلیق کار کو فراموش کر دیا جو شعر و ادب کا اہم ترین ستون رہا، ڈاکٹر شبیہ الحسن

(پ ر) عالمی مجلس ادب پاکستان اور پبلک لائبریری ساہیوال کی جانب سے گزشتہ روز مرزا اسلامت علی دبیر کی شخصیت اور فن کے حوالے سے ایک یادگار انٹرنیشنل سیمینار کا اہتمام کیا گیا جس کی صدارت ڈاکٹر سلیم اختر نے کی جبکہ امجد اسلام امجد مہمان خصوصی تھے۔ کینیڈا سے معروف محقق اور نقاد ڈاکٹر تقی عابدی اور امریکہ سے کمال انصاری خصوصی طور پر تشریف لائے تھے۔ عالمی مجلس ادب کے چیئرمین ڈاکٹر سید شبیہ الحسن نے کہا کہ عصر حاضر میں ہم نے ہر اس تخلیق کار کو فراموش کر دیا ہے جو شعر و ادب کا اہم ترین ستون رہا ہے۔ انہوں نے کہا کہ دبیر کا مقام انیس سے بھی بلند ہے کیونکہ انہوں نے شعر و ادب کی مختلف اصناف میں طبع آزمائی کی ہے۔ ڈاکٹر عبدالکریم خالد نے افتتاحی کلمات میں کہا کہ دبیر فہمی کی آج بے حد ضرورت ہے کیونکہ ہم اپنی حقیقی تہذیب و ثقافت سے دور ہوتے جا رہے ہیں۔ امجد اسلام امجد نے کہا کہ آج دبیر شناسی کی زیادہ ضرورت ہے اور تقی عابدی نے میرزا دبیر کے حوالے جو کام کیا ہے وہ لائق صد تحسین ہے۔

ایک روزہ بین الاقوامی سیمینار
موضوع
اردو مرثیہ ۔ ادبِ عالیہ
زیر اہتمام
شعبۂ اردو، جامعہ کراچی
تاریخ
۲۷، اکتوبر بروز منگل ۲۰۰۹ء
مقام
آرٹس آڈیٹوریم ۔ جامعہ کراچی

روزنامہ آواز لاہور

روزنامہ آواز (3) 25 دسمبر 2008ء

میرزا سلامت علی دبیر کی یاد میں منعقدہ سیمینار میں ڈاکٹر سید شبیہ الحسن، تقی عابدی، سلیم اختر اور امجد اسلام امجد شریک ہیں

میرزا سلامت علی دبیر کی یاد میں انٹرنیشنل سیمینار

لاہور (پ ر) عالمی مجلس ادب پاکستان اور پنجاب لٹریری سوسائٹی کی جانب سے گزشتہ روز میرزا سلامت علی دبیر کی شخصیت اور فن کے حوالے سے انٹرنیشنل سیمینار کا اہتمام کیا گیا جس کی صدارت ڈاکٹر سلیم اختر نے کی جبکہ امجد اسلام امجد مہمان خصوصی تھے۔ کینیڈا سے معروف محقق اور نقاد ڈاکٹر تقی عابدی اور امریکہ سے شکیل انصاری خصوصی طور پر تشریف لائے تھے۔ عالمی مجلس ادب کے چیئرمین ڈاکٹر سید شبیہ الحسن نے کہا کہ عصر حاضر میں ہم نے ایسے تخلیق کار کو فراموش کر دیا ہے جو شعر و ادب کا اہم ترین ستون رہا ہے۔ انہوں نے کہا کہ دبیر کا مقام انیس سے بھی بلند ہے کہ انہوں نے شعر و ادب کی مختلف اصناف میں طبع آزمائی کی ہے۔ ڈاکٹر سلیم اختر نے کہا کہ دبیر کے مقام و مرتبے کو شبلی نعمانی کی تنقید نے کمزور کیا۔

روزنامہ انصاف لاہور (3) 25 دسمبر 2008ء

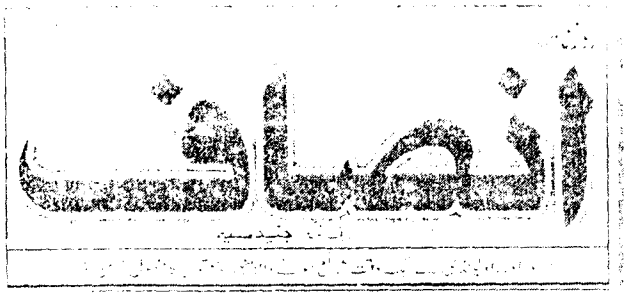

انصاف

اردو ادب کی تفہیم کیلئے دبیر کے کلام سے استفادہ کرنا ضروری ہے

ہم نے شعر و ادب کے اہم ترین ستون کو فراموش کر دیا ہے، دبیر سیمینار سے تقی عابدی و امجد اسلام امجد و دیگر کا خطاب

لاہور (پ ر) عالمی مجلس ادب پاکستان اور پیک لٹریری سوسائٹی کی جانب سے گزشتہ روز میرزا اسلامت علی دبیر کی شخصیت اور فن کے حوالے سے ایک یادگار انٹرنیشنل سیمینار کا اہتمام کیا گیا جس کی صدارت ڈاکٹر سیمیں اختر نے کی جبکہ امجد اسلام امجد مہمان خصوصی تھے۔ [illegible] معروف محقق اور نقاد ڈاکٹر تقی عابدی اور [illegible] انصاری خصوصی طور پر تشریف لائے تھے۔ عالمی مجلس ادب چیئرمین ڈاکٹر سید شبیہ الحسن نے کہ عصر حاضر میں ہم نے بڑا اس تخلیق کار کو فراموش کر دیا ہے۔ جو شعر و ادب کا اہم ترین ستون رہا ہے۔ ڈاکٹر عبدالکریم خالد نے افتتاحی کلمات میں کہا کہ [illegible] ثقافت سے دور ہوتے جا رہے ہیں۔ امجد اسلام امجد نے کہا کہ آج دبیر [illegible] تقی عابدی نے میرزا دبیر کے حوالے سے جو کام کیا ہے وہ لائق صد تحسین ہے۔

میرزا اسلامت علی دبیر کی یاد میں منعقدہ انٹرنیشنل سیمینار میں ڈاکٹر سید شبیہ الحسن و دیگر موجود ہیں

غالب کو سمجھنے کے لیے ان کے لہجہ سے واقفیت ضروری ہے

سالانہ بین الاقوامی غالب سمینار میں معروف ادیب تقی عابدی کا اظہار خیال

ممتاز عالم رضوی

نئی دہلی 16 دسمبر، ہندوستان ایکسپریس نیوز بیورو: غالب کو سمجھنے کے لیے ان کے لہجہ سے واقفیت ضروری ہے۔ میں کیا سمجھ رہا ہوں یہ اہم نہیں ہے بلکہ غالب کیا سمجھ رہا ہے یہ زیادہ اہم ہے۔ ان خیالات کا اظہار کناڈا کے معروف ادیب و ناقد ڈاکٹر تقی عابدی نے کیا۔ وہ غالب انسٹی ٹیوٹ کی جانب سے منعقدہ سالانہ بین الاقوامی سمینار، بہ موضوع ''بیسویں صدی کا تخلیقی ذہن اور غالب'' کے دسرے روز دوسرے اجلاس کو خطاب کرر ہے تھے۔ انہوں نے اپنا مقالہ ''غالب کا نعتیہ طرز بیان اور موجودہ عہد'' پیش کرتے ہوئے مزید کہا کہ صرف تاثراتی تنقید سے غالب کی تفہیم ممکن نہیں ہے۔ انہوں نے کہا کہ غالب جب شعر خلق کرتا ہے تو بہت ساری صنعتیں جمع ہو جاتی ہیں۔ میں غالب کے ایک وکیل کی حیثیت سے یہ پوچھتا ہوں کہ آخر غالب کی نعتیہ شاعری پر گفتگو کیوں نہیں کی گئی، صرف اس لیے کہ وہ شرابی تھے۔ کیا اس وجہ سے نعت کے 281 اشعار نظر انداز کردیے جائیں گے۔ انہوں نے کہا کہ برصغیر میں افلاک کی سیر کرنے والا اگر کوئی شاعر ہے تو وہ صرف غالب ہے۔ پہلے اجلاس میں تقریر کرتے ہوئے ممتاز افسانہ نگار جوگندر پال نے کہا کہ مجھے لگتا ہے کہ آج کے فکشن سے غالب کا گہرا تعلق ہے۔ بڑا لکھنے والا کسی طبقہ، کسی ملک، کسی ایک عہد کے لیے نہیں ہوتا اور غالب ایسا ہی فنکار ہے۔ انہوں نے کہا کہ بڑے شاعر کی کوئی شرح نہیں ہوتی۔ انہوں نے کہا کہ بڑا لکھنے والا اپنے طور پر آپ کو غور و فکر کی دعوت دیتا ہے۔ ڈاکٹر مصحب اقبال توصیفی نے اپنا مقالہ ''غالب میرا عہد میری شاعری'' پیش کیا۔ انہوں نے کہا کہ بیسویں صدی میں جو تبدیلی ہوئی ہے وہ غالب کی دین ہے۔ غالب نے نیا آسمان اور نئے افق دیے ہیں۔ غالب کے امکانات کی دنیا اور تعمیرات کا جو نقشہ ہے اس سے میں کیا، آنے والی نسلیں بھی فیضیاب ہوتی رہیں گی۔ پروفیسر شمیم حنفی نے اپنا مقالہ ''غالب اور غالب کی دلی'' پیش کیا۔ انہوں نے کہا کہ غالب کے یہاں آپ بیتی اور شہر بیتی دونوں ہیں۔ وہ آپ بیتی شاعری کے ذریعہ اور شہر بیتی خطوط کے ذریعہ پیش کرتے ہیں۔ ان کے یہاں ایک ساتھ کئی عہد سانس لیتے ہیں۔ وہ کبھی ایک سمت تو کبھی کئی سمتوں میں سفر کرتے ہوئے معلوم ہوتے ہیں۔ وہ دہلی کی اچھی اور بری دونوں تصویر بناتے ہیں۔ غالب وہ ہیں جس نے نئی بیداری کا خیر مقدم کیا۔ ڈاکٹر حسن عباس نے کہا کہ غالب نئے عہد کا پہلا شاعر بھی تھا اور اپنے عہد کا آخری شاعر بھی۔ صدارتی تقریر کرتے ہوئے پروفیسر محمد حسن نے کہا کہ ان پڑھے گئے تمام مقالات سے اندازہ ہوتا ہے کہ غالب کے یہاں کس قدر تضادات ہے اور یہی تضادات غالب کا کمال اور کمال فن ہے۔ انہیں کو ملا کر ایک عظیم شخصیت بنتی ہے اور یہ تضادات ایک وحدت بن جاتی ہے۔ پہلے اجلاس کی صدارت پروفیسر سید امیر حسن عابدی، ڈاکٹر خلیق انجم، پروفیسر نذیر احمد نے جب کہ دوسرے، تیسرے اور چوتھے اجلاس کی صدارت میں پروفیسر محمد حسن، پروفیسر صدیق الرحمٰن قدوائی، سید شریف الحسن نقوی، ڈاکٹر کمال احمد صدیقی، پروفیسر اسلم پرویز وغیرہ شامل ہیں جب کہ مقالہ نگاروں میں انسر رہبین، ڈاکٹر سرورالہدیٰ، پروفیسر علی احمد فاطمی، پروفیسر عتیق اللہ، ڈاکٹر اصغر ندیم سید، ڈاکٹر خالد جاوید، اقبال مجید، زبیر رضوی اور علیم صبا نویدی شامل ہیں۔ مقالوں سے اندازہ ہوا کہ سمینار اپنے مقصد میں کامیاب رہا ہے۔ نظامت کے فرائض ڈاکٹر رضا حیدر، ڈاکٹر اشفاق عارفی اور ڈاکٹر عمیر منظر نے انجام دیے۔ اس سلسلے کی کڑی میں شام کو ایک عالمی مشاعرہ کا اہتمام کیا گیا جس میں ملک اور بیرون ملک کے استاد اور ممتاز شاعروں نے اپنے کلام پیش کیے۔

سمینار سے خطاب کرتے ہوئے ڈاکٹر تقی عابدی اور ڈائس پر موجود ڈاکٹر اشفاق عارفی، پروفیسر محمد حسن، پروفیسر صدیق الرحمٰن قدوائی وغیرہ۔۔۔۔۔تصویر: نہال احمد

غالب کو سمجھنے کے لیے اُن کے لہجہ سے واقفیت ضروری ہے

سالانہ بین الاقوامی غالب سمینار میں معروف ادیب تقی عابدی کا اظہار خیال

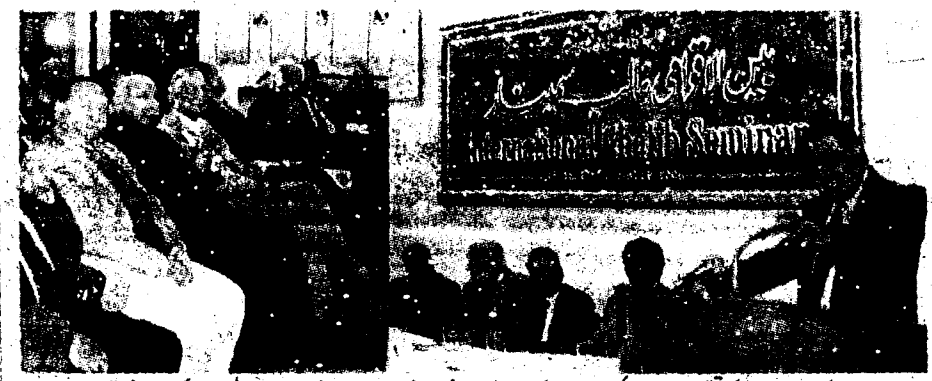

سمینار سے خطاب کرتے ہوئے ڈاکٹر تقی عابدی اور ڈائس پر موجود ڈاکٹر اشفاق عارفی، پروفیسر محمد حسن، پروفیسر صدیق الرحمٰن قدوائی وغیرہ..... تصویر: نہال احمد

ممتاز عالم رضوی

نئی دہلی 16 دسمبر، ہندوستان ایکسپریس نیوز بیورو: غالب کو سمجھنے کے لیے ان کے لہجے سے واقفیت ضروری ہے۔ میں کیا سمجھ رہا ہوں یہ اہم نہیں ہے بلکہ غالب کیا سمجھ رہا ہے یہ زیادہ اہم ہے۔ ان خیالات کا اظہار کناڈا کے معروف ادیب و ناقد ڈاکٹر تقی عابدی نے کیا۔ وہ غالب انسٹی ٹیوٹ کی جانب سے منعقدہ سالانہ بین الاقوامی سمینار، بہ موضوع ''بیسویں صدی کا تخلیقی ذہن اور غالب'' کے دسرے روز دوسرے اجلاس کو خطاب کر رہے تھے۔ انہوں نے اپنا مقالہ ''غالب کا نعتیہ طرز بیان اور موجودہ عہد'' پیش کرتے ہوئے مزید کہا کہ صرف تاثراتی تنقید سے غالب کی تفہیم ممکن نہیں ہے۔ انہوں نے کہا کہ غالب جب شعر خلق کرتا ہے تو بہت ساری صنعتیں جمع ہو جاتی ہیں۔ میں غالب کے ایک وکیل کی حیثیت سے یہ پوچھتا ہوں کہ آخر غالب کی نعتیہ شاعری پر گفتگو کیوں نہیں کی گئی، صرف اس لیے کہ وہ شرابی تھے۔ کیا اس وجہ سے نعت کے 281 اشعار نظر انداز کر دیے جائیں گے۔ انہوں نے کہا کہ برصغیر میں افلاک کی سیر کرنے والا اگر کوئی شاعر ہے تو وہ صرف غالب ہے۔ پہلے اجلاس میں تقریر کرتے ہوئے ممتاز افسانہ نگار جوگندر پال نے کہا کہ مجھے لگتا ہے کہ آج کے فکشن سے غالب کا گہرا تعلق ہے۔ بڑا لکھنے والا کسی طبقہ، کسی ملک، کسی ایک عہد کے لیے نہیں ہوتا اور غالب ایسا ہی فنکار ہے۔ انہوں نے کہا کہ بڑے شاعر کی کوئی شرح نہیں ہوتی۔ انہوں نے کہا کہ بڑا لکھنے والا اپنے طور پر آپ کو غور و فکر کی دعوت دیتا ہے۔ ڈاکٹر مصعب اقبال توصیفی نے اپنا مقالہ ''غالب میرا عہد میری شاعری'' پیش کیا۔ انہوں نے کہا کہ بیسویں صدی میں جو تبدیلی ہوئی ہے وہ غالب کی دین ہے۔ غالب نے نیا آسمان اور نئے افق دیے ہیں۔ غالب کے امکانات کی دنیا اور تعمیرات کا جو نقشہ ہے اس سے میں کیا، آنے والی نسلیں بھی فیضیاب ہوتی رہیں گی۔ پروفیسر شمیم حنفی نے اپنا مقالہ ''غالب اور غالب کی دلّی'' پیش کیا۔ انہوں نے کہا کہ غالب کے یہاں آپ بیتی اور شہر بیتی دونوں ہیں۔ وہ آپ بیتی شاعری کے ذریعہ اور شہر بیتی خطوط کے ذریعہ پیش کرتے ہیں۔ ان کے یہاں ایک ساتھ کئی عہد سانس لیتے ہیں۔ وہ کبھی ایک سمت تو کبھی کئی سمتوں میں سفر کرتے ہوئے معلوم ہوتے ہیں۔ وہ دہلی کی اچھی اور بری دونوں تصویر بناتے ہیں۔ غالب وہ ہیں جس نے نئی بیداری کا خیر مقدم کیا۔ ڈاکٹر حسن عباس نے کہا کہ غالب نئے عہد کا پہلا شاعر بھی تھا اور اپنے عہد کا آخری شاعر بھی۔ صدارتی تقریر کرتے ہوئے پروفیسر محمد حسن نے کہا کہ ان پڑھے گئے تمام مقالات سے اندازہ ہوتا ہے کہ غالب کے یہاں کس قدر تضادات ہے اور یہی تضادات غالب کا کمال اور کمال فن ہے۔ انہیں کو ملا کر ایک عظیم شخصیت بنتی ہے اور یہ تضادات ایک وحدت بن جاتی ہے۔ پہلے اجلاس کی صدارت پروفیسر سید امیر حسن عابدی، ڈاکٹر خلیق انجم، پروفیسر نذیر احمد نے جب کہ دوسرے، تیسرے اور چوتھے اجلاس کی صدارت میں پروفیسر محمد حسن، پروفیسر صدیق الرحمٰن قدوائی، سید شریف الحسن نقوی، ڈاکٹر کمال احمد صدیقی، پروفیسر اسلم پرویز وغیرہ شامل ہیں جب کہ مقالہ نگاروں میں افسر رہبین، ڈاکٹر سرور الہدیٰ، پروفیسر علی احمد فاطمی، پروفیسر عتیق اللہ، ڈاکٹر اصغر ندیم سید، ڈاکٹر خالد جاوید، اقبال مجید، زبیر رضوی اور علیم صبا نویدی شامل ہیں۔ مقالوں سے اندازہ ہوا کہ سمینار اپنے مقصد میں کامیاب رہا ہے۔ نظامت کے فرائض ڈاکٹر رضا حیدر، ڈاکٹر اشفاق عارفی اور ڈاکٹر عمیر منظر نے انجام دیے۔ اس سلسلے کی کڑی میں شام کو ایک عالمی مشاعرہ کا اہتمام کیا گیا جس میں ملک اور بیرون ملک کے استاد اور ممتاز شاعروں نے اپنے کلام پیش کیے۔

استعمال کیا۔ ڈاکٹر ۔۔۔ ڈاکٹر تقی عابدی کا ۔۔۔
تعارف کرایا اور کہا کہ کینیڈا جس جگہ پر رہ کر آپ نے گذشتہ تیس

سال میں تیس سے زیادہ علمی ادبی اور تحقیق کرانقدر تصانیف اردو کو پیش کی ہیں اور وہاں آپ کی ذاتی لائبریری میں دس ہزار سے زیادہ اردو کی کتابیں ہیں اس طرح آپ مستقل اردو کے لئے جدوجہد میں مصروف ہیں۔ ڈاکٹر تقی عابدی نے اپنی تقریر میں کہا ہم کہیں اور چلے جائیں اپنی زبان اردو اپنی تہذیب اور ثقافت کو فخر کے ساتھ اپنے سینے سے لگائے رکھتے ہیں اور سمجھتے ہیں کہ ہم رہنے والے ہیں اسی اجڑے دیار کے۔ آپ نے مزید کہا کہ مجھے دنیا کے مختلف ممالک سے ایوارڈ ملے ہیں لیکن یہ دہلی یعنی سلطنت اردو کے معلی میں ملنے والا ایوارڈ میرے لئے ایوارڈ معلی ہے۔

عالمی مشاعرے کی نظامت کے فرائض ساغر خیامی نے انجام دیئے چند شعراء کے منتخب اشعار مندرجہ ذیل ہیں۔

اس سے پہلے کہ بے وفا ہو جائیں
کیوں نہ اے دوست ہم جدا ہو جائیں
بندگی ہم نے چھوڑ دی ہے فراز
کیا کریں لوگ خدا ہو جائیں
(احمد فراز پاکستان)

☆☆☆

بھٹکے ہوئے منزل پہ پہنچ جائیں گے خود ہی
رستے سے اگر رہنماؤں کو ہٹا دو
لوگوں میں فقط عیب نظر آتے جس کو
اسکو کبھی آئینہ خانے میں بٹھا دو
(ڈاکٹر تقی عابدی کینیڈا)

☆☆☆

فصل جنون کے باب میں ہم نے جو بھی کہانی لکھی ہے
۔۔۔
اپنے دیس سے آنے والے دیس کا کچھ احوال سنا
خوف کی چادر اوڑھے بیٹھی کی حالت کیسی ہے
(عاشور کاظمی لندن)

نئی دہلی یہاں حسن آرا ٹرسٹ کی جانب سے جشن مجاہدین اردو عنوان سے عالمی مشاعرہ 20 مئی کو منعقد ہوا تھا اس کا دوسرا اجلاس عالمی بزم نعت و منقبت اور نوحہ اسلام عنوان سے 22 مئی کو فائن آرٹ آڈیٹوریم جامعہ ملیہ میں سات بجے شام منعقد ہوا۔ اس اجلاس کو عالمی شہرت کے مالک شاعر ریحان اعظمی پاکستان کے نام منسوب کیا گیا تھا مہمان خصوصی کی حیثیت سے جناب عاشور کاظمی لندن نے شرکت فرمائی افتتاح جناب احمد فراز پاکستان نے کیا اور صدارت کے فرائض جناب ڈاکٹر تقی عابدی کینیڈا نے انجام دیئے اور نظامت ڈاکٹر عظیم امروہوی نے کی۔ مولانا سید جلال حیدر صاحب قبلہ نے تلاوت کلام پاک سے کیا اس کے بعد مہمانوں کا استقبال جناب مریم عباس زیدی نے کیا شعرا کے کلام کا انتخاب مندرجہ ذیل ہے احمد فراز صاحب نے پہلے نعت پیش کی۔
میرے ضمیر نے قاتل کو نہیں بخشا میں کیسے صلح کروں قتل کرنے والوں سے اس کے بعد سلام پیش کیا۔
حسن تجھ کو کہیں کیا سلام ہم جیسے
کہ تو عظیم ہے ننگ و نام ہم جیسے

☆☆☆☆
ہوتے رہیں لے ہاتھ علم یا علی مدد

جھکنے نہ دیں گے حق کا علم یا علی مدد
باطل کے دبانے پہ بیٹھی ہوئی یہ قوم
تاریخ کر رہی ہے رقم یا علی مدد
☆☆☆☆
بے چینی کے دھندلکوں بھی ہے امت تیری

آج تو کل سے بھی زیادہ ہے ضرورت تیری
(عاشور کاظمی لندن)

بدل گیا ہے مقدر تیرے حوالے سے
دعا جو آئی ہے لب پر ترے حوالے سے
۔۔۔
کچھ میں آئے تو بیر تیرے حوالے سے
(ہمایوں ظفر زیدی مسقط)

☆☆☆☆

نکلے تھے ہم خلوص کا اک آئینہ لئے
لوگوں نے اپنے ہاتھ میں پتھر اٹھا لئے
(ڈاکٹر ماجد دیوبندی)

☆☆☆☆

خون انسان کا ہے پینے سے جو خوش ہوتا ہے
نام اس کا کبھی سودی کہیں بش ہوتا ہے
(شکیل حسن شمسی)

☆☆☆☆

تعقیب دے رہے ہیں داد اس کی
غم چھپانا بھی غم گساری ہے
(متین امروہوی)

☆☆☆☆

باغ اردو میں قدم رکھ ہی نہیں سکتی خزاں
نہ سہی میر مگر وجہ میر تو ہے
(نایاب دہلوی)

☆☆☆☆

تمہاری قسمت اک ایسادن ہے کہ شام جس کی کبھی نہ ہوگی

☆☆☆☆

جو اپنے ہاتھ میں نجات کی کنجی نہیں رکھتا
وہ اپنے پاس جینے کے لئے کچھ بھی نہیں رکھتا
(محمد میراں)

دل ان کے جو نام کر رہے ہو
ہم خود کو عام کر رہے ہو
(۔۔۔)

☆☆☆☆

اس موقع پر مشہور پاکستانی غزل کی شاعرہ محترمہ گلشن آرا سید نے بھی اپنے فن کا مظاہرہ کیا بے حد کامیابی کے بعد مشاعرے کا اختتام ہوا اور آخر میں کمال حیدر نے شعراء سامعین غیر ملکی مہمانوں کے شکریے کے ساتھ آئی سی سی آر اور سونی فاؤنڈیشن اردو شعرا ادبا اور دیگر شعبوں میں اردو کی خدمت کرنے والے گذشتہ 700 سال میں ہونے والی شخصیت کی شاندار تصاویر کی نمائش بھی کی گئی جسے بہت پسند کیا گیا کیونکہ صدر دروازے سے ۔۔۔ دونوں جانب قد آور تصاویر آویزاں تھیں اور ہر ہال میں چاروں جانب اہل اردو کی تصاویر مع اشعار اور جشن ولادت ۔۔۔ تصاویر کی نمائش کا افتتاح غیر ملکی شعرا نے ۔۔۔ کرکے کیا

شکایت خواب جیسا ہو گیا ہوں
لئے اسباب جیسا ہو گیا ہوں
ضرورت ہی نہیں اس کی کسی کو
ادب آداب جیسا ہو گیا ہوں

(ڈاکٹر ریحان اعظمی پاکستان)

☆☆☆☆

آگہی اسکی کی دیدار والے ہو گئے
آپ کی صحبت میں صاحب کردار ہو گئے
۔۔۔
۔۔۔ رہتے تھے جو دربار والے ہو گئے
(خالد فریدی سعودی عرب)

☆☆☆☆

آپ ایٹم کو توڑ سکتے ہیں رخ ہواؤں کا موڑ سکتے ہیں
قتل و غارت گری و ظلم و ستم کیا یہ عادات چھوڑ سکتے ہیں
(ڈاکٹر اقبال مرزا لندن)

☆☆☆☆

خون روئے گا عمر بھر بے حد دیکھ مجھے دغا نہ کر بے حد
ایک عالم تھا منتظر جن کا ان کی قسمت میں تھا سفر بے حد
(ظفر زیدی مسقط)

☆☆☆☆

آئینہ تو ہم روز بدل سکتے ہیں اخلاق میں ترمیم نہیں ہو سکتی
ہم روز نئے ملک بنا سکتے ہیں تہذیب کی تقسیم نہیں ہو سکتی
(پنڈت آنند موہن گلزار دہلوی)

☆☆☆☆

بولی بیوی اپنے شوہر سے زندگی کیوں عذاب کرتے ہیں
غیر کرتے ہیں حسن کا دیدار آپ میک اپ خراب کرتے ہیں
(ساغر خیامی)

کبھی بھی چھوڑ کے اپنی زمیں نہیں جاتے
ہمیں بلاتی ہے دنیا ہمیں نہیں جاتے

☆☆☆☆ (ڈاکٹر تقی عابدی کینیڈا)

عاشق میں دو ہتھ کی شاعری سنگیت تھی
اک تو ری جانے کیا تھا جانے کیا گاتے رہے
زندگی بھر عشق کا اظہار کرنے کیلئے
وہ کبھی کہلاتے رہے اور ہم بھی بہکاتے رہے
(پیار ۔۔۔)

☆☆☆☆

کچھ پہلوؤں نے میری نظر دیکھتی نہ تھی
دنیا بری تو تھی مگر اتنی بری نہ تھی
(انور سعیدی)

☆☆☆☆

رہتا آتا نہیں زمیں پہ جنہیں
بات کرتے ہیں آسمانوں کی
(پروفیسر انوپ سنگھ داس)

☆☆☆☆

شاعری شوق نہیں میرا امیروں کی طرح
میرے اشعار بھی ہوتے ہیں فقیروں کی طرح
(ڈاکٹر ۔۔۔ سنگھ)

☆☆☆☆

سنورتے ہیں وہ دیکھ کر آئینے کو

☆☆☆☆

زلف و آبرو کس اوصاف حمیدہ لکھو
جیسا قرآن نے سمجھا انہیں ویسا لکھو
چاند طلعت ہے تو تشبیہ محمد لکھو
کیوں بھلا چاند کو اتنا رخ زیبا لکھو
ذکر جس چھت کے تلے سید ابرار کا ہو
اس کو پھر چھت نہ کہو گنبد خضراء لکھو
(ڈاکٹر ریحان اعظمی پاکستان)

☆☆☆☆

حمد خدا صفات نبی جرأت حسین اتفاق
سارے تیر تھے زینب کمان تھی
جب سر قلم ہوئے تو زبانیں بھی سو گئیں
زینب ہر اک شہید کی گویا زبان تھی
(ڈاکٹر اقبال مرزا لندن)

☆☆☆☆

پھر دل نے کئے نعت محمد کے ارادے
یارب میری تخیل کو احرام پہنا دے
(نایاب دہلوی)

☆☆☆☆

سنور جائیں تو آئینہ دیکھتا ہے
(ریاض فاروقی)

☆☆☆☆

عجب طرح کی ہے اردو زبان کی خوشبو
جو بولتا ہے وہی عطردان لگتا ہے
(ڈاکٹر عظیم امروہوی)

☆☆☆☆

کون کہتا ہے کہ بادیدہ نم ملتے ہیں
مسکرا کر غم حالات سے ہم ملتے ہیں
(شیلا سنگھ صبا)

زندگی کی راہوں میں رہبری ضروری ہے
تیرگی مٹانے کو روشنی ضروری ہے
ملے نہیں ہوا بیعت پار ہوگی تیری
اے یزید تجھ کو خودکشی ضروری ہے
(سلیم امروہوی)

☆☆☆☆

آخر میں کمال حیدر جنرل سیکرٹری ٹرسٹ نے سب کا شکریہ ادا کیا اور تمام مہمانان و سامعین نے تقریب میں شرکت فرمائی گیارہ بجے پوری کامیابی کے بعد اجلاس عالمی اور یادگار پروگرام اختتام ہوا۔

جشن مجاہدین اردو کے عنوان حسن آرٹرسٹ کے زیر اہتمام عالمی مشاعرہ

ڈاکٹر سید تقی عابدی (کینیڈا) کو شاندار تقریب میں عالمی مجاہد اردو ایوارڈ سے نوازا گیا

خصوصی رپورٹ

نئی دہلی جامعہ ملیہ اسلامیہ کے انصاری آڈیٹوریم میں جناب احمد فراز پاکستان کی صدارت میں ایک عالمی مشاعرہ منعقد ہوا۔ جشن مجاہدین اردو عنوان سے ہونے والے اس پروگرام میں عالمی شہرت کے مالک محقق اعظم ماہر رثائی ادب ڈاکٹر تقی عابدی کینیڈا کی ادبی خدمات کے اعتراف میں حسن آرٹرسٹ کی جانب سے عالمی مجاہد اردو ایوارڈ بدست جناب محمد اشرف فاطمی وزیر ایچ آر ڈی حکومت ہند پیش کیا گیا۔ محترمہ زکا دیش پانڈے ایم پی جناب ظہیر زیدی اور پروفیسر اختر نے مہمانان کا استقبال کیا۔ ڈاکٹر عظیم امروہوی نے ڈاکٹر تقی عابدی کا تفصیلی تعارف کرایا اور کہا کہ کینیڈا جس جگہ پر رہ کر آپ نے گذشتہ بیس

سال میں تیس سے زیادہ علمی ادبی اور تحقیقی گرانقدر تصانیف اردو کو پیش کی ہیں اور وہاں آپ کی ذاتی لائبریری میں دس ہزار سے زیادہ اردو کی کتابیں ہیں اس طرح آپ مستقل اردو کے لئے جدوجہد میں مصروف ہیں۔ ڈاکٹر تقی عابدی نے اپنی تقریر [illegible] اردو اپنی تہذیب اور ثقافت کو فخر کے ساتھ اپنے سینے سے لگائے رکھتے ہیں اور سمجھتے ہیں [illegible] آپ نے مزید کہا کہ مجھے دنیا کے مختلف ممالک سے ایوارڈ ملے ہیں لیکن یہ دہلی جیسی سلطنت اردو کے محلّی میں ملنے والا ایوارڈ میرے لئے ایوارڈ عظمیٰ ہے۔

عالمی مشاعرے کی نظامت کے فرائض ساغر خیامی نے انجام دیئے چند شعراء کے منتخب اشعار مندرجہ ذیل ہیں

اس سے پہلے کہ بے وفا ہو جائیں
کیوں نہ اے دوست ہم جدا ہو جائیں
بندگی ہم نے چھوڑ دی ہے فراز
کیا کریں لوگ جب خدا ہو جائیں
(احمد فراز پاکستان)

☆☆☆

بھٹکے ہوئے منزل پہ پہنچ جائیں گے خود ہی
رستے سے اگر [illegible] کو ہٹا دو
لوگوں میں فقط عیب نظر آتے جس کو
اسکو کبھی آئینہ خانے میں بٹھا دو
(ڈاکٹر تقی عابدی کینیڈا)

☆☆☆

فصل جنون کے باب میں ہم نے جو بھی کہانی لکھی ہے
[illegible] ہماری اپنی ہے
[illegible]
خوف کی چادر [illegible] کی حالت کیسی ہے
([illegible])

[illegible] 22 [illegible] منعقد ہوا۔ [illegible] مہمان خصوصی کی حیثیت سے [illegible] افتتاح جناب احمد فراز پاکستان نے یا اور صدارت کے فرائض جناب ڈاکٹر تقی عابدی کینیڈا نے [illegible] اور نظامت ڈاکٹر عظیم امروہوی نے کی۔ مولانا سید کمال حیدر صاحب قبلہ نے تلاوت کلام پاک سے کیا اس کے بعد مہمانوں کا استقبال جناب محمد عباس زیدی نے کیا شعراء کے کلام کا انتخاب مندرجہ ذیل ہے احمد فراز صاحب نے پہلے نعت پیش کی۔
[illegible]
کر نعلوں سے اس کے بعد سلام پیش کیا۔

حسن تجھ کو کہیں کیا سلام ہم جیسے
کہ تو عظیم ہے ننگ و نام ہم جیسے

خطیب شہر کا مسلک ہے بیعت سلطاں
ترے لہو کو کریں گے سلام ہم جیسے

☆☆☆☆

ہوتے رہیں گے ہاتھ قلم پائمال مدد
[illegible]

ہماری قسمت اک ایسے شب ہے کہ جسکی کوئی سحر نہیں
(سلیم امروہوی)

☆☆☆☆

جو اپنے ہاتھ میں کلمات کی کنجی نہیں رکھتا
وہ اپنے پاس جینے کے لئے کچھ بھی نہیں رکھتا
(محمد مہران)

دل ان کے جو نام کر رہے ہو
تم خود کو عام کر رہے ہو
(منیر نقوی)

☆☆☆☆

اس موقع پر مشہور پاکستانی غزل کی سنگر محترمہ گلشن آرا سید نے بھی اپنے فن کا مظاہرہ کیا بے حد کامیابی کے بعد مشاعرے کا اختتام ہوا اور آخر میں کمال حیدر نے شعراء سامعین غیر ملکی مہمانان کے شکریے کے ساتھ آئی سی سی آر اور صوفی فاؤنڈیشن اردو شعراء ادبا اور دیگر شعبوں میں اردو کی خدمت کرنے والے گذشتہ 700 سال میں ہونے والی شخصیت کی شاندار تصاویر کی نمائش بھی کی گئی جسے بہت پسند کیا گیا کیونکہ صدر دروازے سے ہی دونوں جانب قد آدم تصاویر آویزاں تھیں اور پھر ہاؤس میں چاروں جانب اہل اردو کی تصاویر مع اشعار اور جشن ولادت وفات لگی ہوئی تھیں تصاویر کی نمائش کا افتتاح غیر ملکی شعراء نے شمع روشن کر کے کیا۔

شکستہ خواب جیسا ہو گیا ہوں
لٹے اسباب جیسا ہو گیا ہوں
ضرورت ہی نہیں جس کی کسی کو
ادب آداب جیسا ہو گیا ہوں

مہاجرین سے اچھے تو پرندے ہیں
شکار ہوتے ہیں لیکن کبھی نہیں جاتے
(منور رانا)

☆☆☆☆

(ڈاکٹر ریحان اعظمی پاکستان)

☆☆☆

آگہی اپنی لی دیدار والے ہو گئے
[illegible]
(ڈاکٹر [illegible])

آج تو کل سے بھی زیادہ ہے ضرورت تیری
(ماشور کاظمی لندن)

دل گیا ہے مقدر تیرے حوالے سے
[illegible]

نئی غزل کی بات [illegible]
(ڈاکٹر عابد [illegible])

☆☆☆

[illegible]

تمہاری قسمت اک بیابان ہے کہ شام جس کی کبھی نہ ہوگی

نی فضا نئی رسم وفا نکلتی ہے
جہاں قیام کریں کربلا نکلتی ہے
(ڈاکٹر ناصر نقوی)

☆☆☆

پائل کہہ کے ہر اک بزم سجا دیتا ہوں
سونے والوں کو بہرحال جگا دیتا ہوں
[illegible]
خاک پاچن کی تری ہیرے جواہر چھوڑ کر
یہ محمد کا ہی ہاتھ میں شیشہ کے
رکھ دیا ہے کے پنچے کو ابھک سوز کر
(ڈاکٹر عابدی کینیڈا)

☆☆☆

زلف و آمد نہیں اوصاف حیدر لکھو
[illegible]
(ڈاکٹر ریحان اعظمی پاکستان)

☆☆☆

حمد خدا صفات نبی جرأت حسین اتفاق
[illegible]
(ڈاکٹر اقبال مرزا لندن)

☆☆☆

[illegible]
(نایاب بلوری)

☆☆☆

زندگی کی راہوں میں رہبری ضروری ہے
[illegible]
(سلیم امروہوی)

☆☆☆

آخر میں کمال حیدر جنرل سکریٹری حسن آرٹرسٹ نے سب کا شکریہ ادا کیا اور تمام مہمانان و سامعین نے ذرہ بھی شرکت فرمائی گیا ہے بیچ پوری کامیابی کے بعد اجلاس عالمی اور یادگار پروگرام کا اختتام ہوا۔

ماضی میں دوستو کیا شاعری ٹیکنیک تھی
[illegible]
(پاپولر میرٹھی)

☆☆☆

کچھ پہلوؤں کو میری نظر دیکھتی نہ تھی
دنیا بری تو تھی مگر اتنی بری نہ تھی
(منظور سعیدی)

☆☆☆

[illegible]
(پروفیسر انوپ سنگھ راہی)

☆☆☆

شاعری شوق نہیں میرا امیروں کی طرح
[illegible]

☆☆☆

کون کہتا ہے کہ زندہ ہم نہیں ہیں
[illegible] ہم جیتے ہیں
(شیلا سنگھ ملیا)

روزنامہ
راشٹریہ سہارا نئی دہلی
27.3.2010

مرثیہ اور غزل اردو کی زندگی کے ضامن ہیں

رثائی ادب کے ماہر معروف ناقد و محقق ڈاکٹر سید تقی عابدی کا اظہار خیال

نئی دہلی (اسد رضا/ ایس این بی)

37 سے زائد کتب کے مصنف، معروف ناقد و محقق ڈاکٹر سید تقی عابدی حال ہی میں کناڈا سے تشریف لائے تو روزنامہ راشٹریہ سہارا کے نمائندہ سے گفتگو کے دوران انہوں نے کہا کہ وہ ہندوستان میں اردو کے مستقبل سے مایوس نہیں ہیں۔ جب تک مجالس میں مراثی اور نوحے نیز ادبی تقاریب میں غزلیں پڑھی جاتی رہیں گی تب تک اردو زبان و ادب کا مستقبل تابناک ہی رہے گا۔ ڈاکٹر عابدی کے الفاظ میں 'مرثیہ اور غزل اردو کی زندگی کی ضمانت ہیں۔ ڈاکٹر صاحب مراثی اور مرزا اسد اللہ خاں غالب اور [illegible] فکر انگیز کتب کے مصنف ہیں۔ لہٰذا ان سے جب رثائی ادب کے بارے میں سوال کیا گیا تو انہوں نے کہا کہ مرثیہ ایک صنف سخن ہے جو اسلام کے امن و سلامتی کے چہرے کو واضح کرتی ہے۔ قرآن کریم، احادیث اور تاریخ اسلام اس بات کے شاہد ہیں کہ مسلمانوں نے کسی پر حملہ نہیں کیا بلکہ دفاع کیا اور مرثیہ اس حقیقت کا عکاس ہے کہ اسلام سلامتی کا مذہب [illegible] جن کی تعداد 1500 سے زائد ہے اس لیے مرثیہ ادب عالیہ کا جز لاینفک ہے۔ لہٰذا اسکولوں، کالجوں اور یونیورسٹیوں میں رثائی ادب بڑے پیمانے پر نصاب کا حصہ بننا چاہیے۔ ایک اور سوال کے جواب میں ڈاکٹر تقی عابدی نے زور دے کر کہا کہ مرثیہ میں اعلیٰ اخلاقی، ادبی اور [illegible] ہیں اور یہ اقدار کسی مخصوص فرقے کے لیے نہیں ہیں بلکہ تمام مسالک اور مذاہب کے لیے ہیں۔ اگرچہ عابدی صاحب ایم بی بی ایس، ایم ڈی ایف سی اے پی اور ایف آر سی پی سی ہیں لیکن انہوں نے ادب کے ڈاکٹروں کے مقابلہ میں زیادہ گہرائی اور گیرائی سے ناقدانہ و محققانہ کارنامے انجام دیے ہیں۔ ڈاکٹر تقی عابدی کا یہ فکر انگیز قول ملاحظہ فرمائیں، وہ کہتے ہیں مرثیہ زندگی کا آئین بھی اور آئینہ بھی۔ تقی عابدی نے روزنامہ راشٹریہ سہارا کی اردو اشاعتوں کی بھی [illegible] برطانیہ، جرمنی، سعودی عرب، یو اے ای وغیرہ میں بھی اردو زبان و ادب ترقی کی راہ پر گامزن ہیں۔ ان نئی اردو بستیوں سے بھی اچھے شاعر، مرثیہ گو، ادیب اور ناقد و محقق ابھرے ہیں۔

ڈاکٹر تقی عابدی

کہتے ہیں

امریکہ میں مشاعروں کا معیار گرتا جارہا ہے

تحقیق کے میدان کو کبھی رزم بناتا ہوں اور اس میں کبھی بزم سجاتا ہوں

ڈاکٹر تقی عابدی کو کون نہیں جانتا۔ مشاعروں کے باذوق سامعین ہوں یا اردو ٹائمز کے قارئین۔ کہیں وہ شفایابی کی نوید بن کر ہسپتالوں میں نظر آتے ہیں اور کہیں اپنی زور بیانی کی اثر انگیزی کے ہمراہ نظامت کا حق ادا کرتے مشاعروں تک۔ ان کی شخصیت اور فن کی بہت سی پرتیں ہیں نثر نگاری، شاعری، تنقید، فن عروض اور مذہبی نوعیت کی عقیدت مندانہ شاعری۔ اگرچہ دہلی میں پیدا ہوئے لیکن حیدر آباد کی زبان کی مٹھاس کے ساتھ ساتھ کبھی کبھی ان میں لکھنؤ کی تہذیب تمدن کی جھلک بھی دکھائی دیتی ہے۔ شمالی امریکہ سے پہلے ایران اور انگلستان میں بھی اپنی پیشہ ورانہ مصروفیات کے سلسلے میں قیام کر چکے ہیں۔ حیدر آباد سے تعلق کی وجہ سے روزنامہ سیاست حیدر آباد اور انگریزی اخبار دکن کرانیکل میں بھی کبھی کبھار کالم نگاری کے جوہر دکھاتے رہے ہیں۔ کہا جاتا ہے کہ حیدر آباد کا کوئی بھی ادیب کتنا ہی معقول، مہذب اور شائستہ کیوں نہ ہو لیکن کبھی نہ کبھی مزاح نگاری کی طرف ضرور مائل ہوتا ہے۔ چنانچہ ڈاکٹر تقی عابدی بھی اپنی افتاد طبع کی سنجیدگی کے باوجود خود کو مزاح نگار کہلوانے کے سزاوار بھی ٹھہرے ہیں۔ اور مزاحیہ مشاعروں کی نظامت بھی کر چکے ہیں۔ باقاعدہ شاعری کے بارے میں بتاتے ہیں کہ اوائل جوانی سے ہی غزلیں، سلام اور نوحے لکھنے کی مشق جاری کی لیکن باقاعدہ شاعری 1989 سے کی۔ ان کی تنقید نگاری پر مشتمل مضامین ہندو پاک اور انگلستان کے جرائد

امریکہ میں اردو کی بقا کیلئے اطمینان بخش کام نہیں ہورہا

میں شائع ہو چکے ہیں۔ اسی ضمن میں چالیس سے زائد مقالات کو "نقد سخن" کے نام سے ترتیب دے رہے ہیں جنہیں جلد شائع کرنے کا ارادہ ہے۔ اس کے علاوہ ڈاکٹر صاحب فارسی ادب سے بھی گہرا شغف رکھتے ہیں۔ عمر خیام کی رباعیات پر ایک کتاب کی تصنیف بھی کر رہے ہیں۔ فن عروض کے حوالے سے محاسن مخصوص صنائع معنوی و لفظی ان کا خاص تحقیقی میدان ہے۔ یہی وجہ ہے کہ بعض اوقات ڈاکٹر صاحب مشاعروں میں غزل سنانے سے پہلے غزل کی بحر اور تقطیع بھی بتا دیتے ہیں۔ لیکن پھر بھی ہم جیسے فن سے بے بہرہ لوگ غلطیاں کرنے سے نہیں چوکتے۔ ذیل میں ڈاکٹر صاحب سے انٹرویو کے سلسلے میں کئے گئے سوالات کے جوابات خود ان کی زبانی تحریر کئے جاتے ہیں۔

اردو ٹائمز: آپ کا اصل شعبہ کون سا ہے شاعری، نثر نگاری یا تنقید؟

تقی عابدی: شاعری اور نثر نگاری میرے تخلیقی افکار ہیں جو میرے ذہن کی پیداوار ہیں اور یہی پیداوار میری شناخت تصور کی جا سکتی ہے۔ تنقید اور تحقیق میری محنت اور کوشش کے میدان ہیں۔ چنانچہ اس میدان کو میں کبھی رزم بناتا ہوں اور اس میں کبھی بزم سجاتا ہوں۔ اور ادب کے اغلب شعراء نے شعر، نثر، تنقید اور تحقیق کو ساتھ ساتھ رکھا ہے۔

اردو ٹائمز: آپ حمد، نعت، غزل، سلام اور مزاح

آج کل شاعری ادب برائے ادب کیلئے نہیں ادب برائے ہدف کیلئے ہوتی ہے

سب کچھ لکھتے ہیں۔ لیکن آپ کی شناخت کیا ہے؟

تقی عابدی: منقبت اور نظمیں میری طبع کی جولان گاہ تصور کی جا سکتی ہیں۔

اردو ٹائمز: کس شاعر کو اپنا آئیڈیل تصور کرتے ہیں؟

تقی عابدی: فارسی میں حافظ شیرازی اور اردو میں میر انیس میرے آئیڈیل شعرا ہیں۔ میر انیس کے مرثیوں میں غزل کا تغزل، مثنوی کا تسلسل، قصیدے کی شوکت کے علاوہ حمد، نعت، منقبت، اور رثائی شاعری کے مضامین کی کمی نہیں۔

اردو ٹائمز: حمد، نعت اور سلام کیا مذہبی رجحان کے اخلاص کی علامت ہیں یا شاعرانہ کمال کی معراج؟

تقی عابدی: حمد، نعت اور سلام میں مذہبی رجحان کے ساتھ ساتھ شاعرانہ کمال کا ہونا بھی ضروری ہے۔ میر انیس مرثیہ گوئی کے آفتاب اس لئے قرار پائے کہ شاعری کے کمال کا تاج ان کے سر پر رہا۔

اردو ٹائمز: آپ غزل و نظم میں جدید اور قدیم کے فرق کو کس طرح واضح کر سکتے ہیں۔ اور آپ موجودہ جدت کے رجحان سے کہاں تک متفق ہیں؟

تقی عابدی: شاعری ذہن اور ماحول کی آمیزش سے جنم لیتی ہے۔ اس لئے ہر دور میں اس کی نسبت سے

انٹرویو: خ۔ ع

ہی اشعار پسند کئے جاتے ہیں۔ آج کل کی شاعری صرف ادب برائے ادب نہیں بلکہ ادب برائے ہدف ہے جو تہذیب، تمدن، بیداری اور انسانی اقدار پر مشتمل ہوتی ہے۔ آج کل کی شاعری میں سادہ زبان، اچھوتے خیالات اور عریاں افکار کی چھاپ نمایاں ہے۔ ہر دو سو سالہ پرانی غزل ہر شخص کے لئے آسان فہم اور قابل تحسین نہیں رہتی۔ موجودہ جدت فکر میں اگر معنی آفرینی اور بلند خیالی ہو تو قابل قبول اور لائق تحسین ہے۔

اردو ٹائمز: آپ کی تنقید نگاری کی کافی دھوم ہے۔ کسی شاعر یا ادیب پر رائے لکھتے وقت آپ کن باتوں کا خیال رکھتے ہیں؟ کیا ناقص مواد کی صورت میں آپ نے کبھی رائے لکھنے سے انکار بھی کیا ہے یا ہر کتاب پر تبصرہ لکھ دیتے ہیں؟

تقی عابدی: تبصرہ نگار اور تنقید نگار کو چاہئے کہ ہر کتاب کی تقریظ یا ہر شاعر کے مجموعہ کلام پر رائے دینے کو اپنا امتحان سمجھے۔ اگر آج کل کے مروجہ نقطہ نظر کو پیش نظر رکھتے ہوئے صرف چند تعریفی یا تعزیتی جملوں سے مطالب بیان کئے جائیں تو صاحب کتاب اور تنقید نگار کے علم اور ذہنی افکار کا پتہ چل جاتا ہے۔ اور اس طرح تنقید نگار صاحب کتاب کو گمراہ اور اپنے آپ کو گمنام کر لیتا ہے۔ اسی لئے ایمانداری کا تقاضہ یہ ہے کہ محاسن کی تعریف اور معائب کی نشان دہی کی جائے اور تنقید نگاری کا حق ادا کیا جائے۔ اور اگر اتنی ہمت نہیں ہے تو اس کتاب پر تبصرہ کرنے سے عذر کر لیا جائے۔

اردو ٹائمز: فن عروض کے حوالے سے پوچھنا ہے کہ عروض سے واقفیت بڑا شاعر ہونے کی دلیل ہے یا عروض جاننے کے باوجود بھی شاعر کو بعض اوقات شاعری میں شرمندگی اٹھانی پڑتی ہے؟

تقی عابدی: عروض جاننا شاعر کے لئے بہت ضروری

> **کبھی کبھی متروک الفاظ بھی شعر کو خوشگوار بنا دیتے ہیں**

ہے۔ لیکن بعض اوقات عروض بھی شاعری کو پھیکا کر دیتی ہے اس لئے اگر عروض کی باریکیوں کی روشنی میں جو غلطی تصور نہیں کی جاتی اور جنہیں اساتذہ نے جواز شاعری کے طور پر استعمال کیا ہے، استعمال کر کے شعر کو ارتقا دیا جا سکتا ہے تو ضروری استعمال کرنا چاہئے۔ کئی متروک الفاظ آج کل شعر

ہو خوشگوار بنا رہے ہے۔ عروض جاننے کے بعد شاعر اپنی کمزوری سے واقف ہوتا ہے۔

اردو ٹائمز: آپ کے خیال میں نیویارک میں کتنے نمائندہ شعرا موجود ہیں؟

تقی عابدی: شمالی امریکہ کے دوسرے شہروں کی نسبت نیویارک میں نمائندہ شاعروں اور شاعرات کی تعداد زیادہ ہے کیونکہ مشق سخن ہی سخنوری کی جان ہے۔

اردو ٹائمز: کیا نیویارک اور امریکہ میں اردو کی بقا کے لئے مثبت بنیادوں پر کام ہو رہا ہے؟

تقی عابدی: نیویارک اور شمالی امریکہ میں اردو کی بقا کے لئے جتنا کام ہونا چاہئے اتنا نہیں ہو رہا کہ اس میں پلاننگ اور ہمکاری نہیں ہے۔ اگر ان منتشر قوتوں کو ایک پلیٹ فارم پر جمع کیا جائے تو یہ کام بڑے پیمانے پر سہا گر ہو گا۔

اردو ٹائمز: امریکہ میں اردو کا مستقبل کیا ہے؟

تقی عابدی: امریکہ میں اردو کا مستقبل تابناک ہے۔ ادبی پیمانے پر زیادہ کام ہو رہا ہے لیکن بنیادی طور کام کم ہو رہا ہے۔ بنیادی طور پر کام کی زیادہ ضرورت ہے۔ بچوں کو اردو پڑھانا اس ملک میں عبادت تصور کیا جانا چاہئے۔

اردو ٹائمز: کیا امریکہ اور نیویارک میں مشاعروں اور اخباروں کے معیار سے اردو کا مستقبل محفوظ ہے؟

تقی عابدی: مشاعرے ادب و شاعری کا مدرسہ ہیں۔ اس سے فائدہ اٹھانا چاہئے۔ لیکن مشاعروں سے فائدہ اٹھانے کی بجائے ان کا معیار دن بدن گرتا جارہا ہے اس کی بہ نسبت اخبارات کا معیار اونچا ہے۔ اور یہی

> **کسی بھی کتاب پر محض تعریفی جملوں سے تنقید نگار کے ذہنی افکار کا پتہ چل جاتا ہے**

ارتقا اور بلندی اردو کے مستقبل کی ضمانت ہے۔

اردو ٹائمز: آپ مزاح بھی لکھتے ہیں۔ امریکہ میں مزاح کو فروغ دینے کے لئے آپ کے ذہن میں کیا

بقیہ صفحہ نمبر 17 پر

ڈاکٹر تقی عابدی سید ضمیر جعفری اور ایک ادب نواز شخصیت کے ہمراہ

ڈاکٹر تقی عابدی کی تازہ غزل

کس کو صدا کروں کہ کوئی ہمنوا نہیں
کس موڑ پر کھڑا ہوں مجھے خود پتہ نہیں
اتنا گرایا مجھ کو غم روزگار نے
میں آسمان کے بھی برابر رہا نہیں
ہم جس کو ساری عمر صدا دیتے رہ گئے
وہ کہہ رہا تھا اس نے تو کچھ بھی سنا نہیں
اس نے جو مسکرا کے نظر کو جھکا دیا
اس دن سے میرا ہاتھ دعا کو اٹھا نہیں
احباب آ گئے ہیں تقی دفن کے لئے
کس نے کہا کہ دوست ترے باوفا نہیں

زندگی کے ساتھ ساتھ
ماہنامہ

چہارسو

راولپنڈی

زندگی کے ساتھ ساتھ

چہارسو

جلد ۱۸، شمارہ: مئی، جون ۲۰۰۹ء

مجلس مشاورت

قارئین چہارسو

زرِ سالانہ

دلِ منظرب نگاہِ شفقانہ

دعائے انتساب

مرے خدا!

مری زمیں

مرے وطن

مرے خوابوں کے چمن

مرے نونہالوں کی جائے پناہ

تجھ سے

فقط تجھ سے

روشنی کی

طلب گار ہے!!!

1-71

بانی مدیر اعلیٰ

سید ضمیر جعفری

مدیر مسؤل

گلزار جاوید

مدیر معاون

بینا جاوید

رابطہ: 537، ویسٹریج-III، راولپنڈی۔ فون: 92-51-5462495 فیکس: 5490181 ای میل: waqars_oma@yahoo.com

پرنٹر: فیض الاسلام پرنٹنگ پریس ٹرنک بازار راولپنڈی

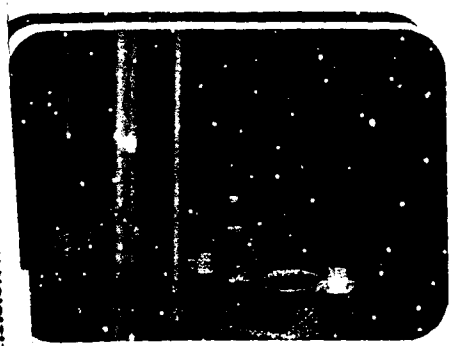

تب قدر ہوگی آپ کو جب ہم نہ رہ جائیں گے

"برسات کا موسم تھا۔ [illegible] ایک بڑے شامیانے کے نیچے فرش بچھا ہوا تھا اور زیر شامیانہ منبر پر میر انیس صاحب مجلس پڑھ رہے تھے۔ [illegible] کافی ہو چکی تھی کہ اس عمر کے لوگوں کو [illegible] اور نزاکت اور زور سے صدا دینے میں تکلف ہوتا ہے۔ مجلس پڑھنے کے دوران میں پانی برسنے لگا اور جابجا شامیانے سے بھی پانی ٹپکنا شروع ہوا۔ سامنے ایک ٹین کا سائبان تھا، جس پر بوندیں جب پڑتی تھیں تو اس قدر زور سے تڑتڑ کی آواز آتی تھی کہ کان پڑی آواز سنائی نہ دیتی تھی۔ اب پانی نے اور زور باندھا اور صحن سے پانی بہہ کر نالی ڈھونڈتا چلا۔ لوگ کسمسا گئے۔ میر انیس نے منبر سے آواز دی کہ "ذرا آپ لوگ میری طرف متوجہ ہو جائیں۔" یہ کہہ کر جو پڑھنا شروع کیا تو وہ سماں بھولتا ہی نہیں کہ ان کی آواز تھی کہ کوئی معجزہ۔ ٹین پر بوندوں کی آواز کو دباتی ہوئی جو آواز بلند ہوئی تو میں ٹین کے سائبان کو بار بار حیرت سے دیکھتا تھا کہ اس پر کیا جادو ہو گیا کہ بوندیں تو پڑتی ہیں، مگر آواز نہیں نکلتی۔"

یہ بیان ہے شیخ ممتاز حسین جونپوری کا، جنہوں نے میر انیس کو ایک مجلس میں پڑھتے سنا تھا۔ یہ 1857ء کے لگ بھگ کا زمانہ تھا۔ اس سے بہت پہلے نوابان اودھ انگریزوں کی عیاری کے ہاتھوں دربدری سے بالکل [illegible] ہو چکے تھے اور انگریزوں نے [illegible] انہیں [illegible] نمایاں کرتے چلے جا رہے تھے۔ جنگ بکسر میں شکست کے بعد آئندہ جنگ کی گنجائش نہ رہی اور ایک طرح سے انگریزوں کے ساتھ جنگ نہ کرنے کا معاہدہ ہو گیا۔ نتیجتاً دولت فوجی مقاصد کی بجائے نمود و نمائش اور مصارف بے جا پر خرچ ہونے لگی۔ غازی الدین حیدر (1819ء تا 1856ء) کا زمانہ لکھنؤ میں عیش کوشی کی انتہا کا زمانہ تھا۔ اس عرصے میں ریختی اور ایہام گوئی کو خوب فروغ حاصل ہوا۔ حقیقت اور سچائی ختم ہوئی تو جھوٹی انا، منافقت اور خوشامد پسندی نے [illegible] [illegible] اور [illegible] خواہوں و [illegible] نواب اور رئیس [illegible] ہو گئے اور چھوٹے درباروں پر دولت [illegible] جس کے نتیجے میں [illegible] لوگ بھی امیر ہو گئے۔ [illegible] اور امارت کے مظاہرے میں خاندانی رئیسوں سے بھی زیادہ گرم جوشی دکھانے لگے۔ یوں تکلفات اور وضعداریوں نے شدت اختیار کی۔

یہ ہے پاکستان

ڈاکٹر طارق عزیز

دوسری جانب مغربی تہذیب نہایت تیزی سے رواج پانے لگی۔ میر انیس کے عہد کے لکھنؤ پر ایک نظر ڈالیں تو جو تصویر ہمارے سامنے ابھرتی ہے [illegible] لکھنؤ کا معاشرہ ایک ثقافتی صدمے سے نڈھال ہو رہا تھا۔ مغربی علوم و فنون کی آمد سے ایک نئے ثقافتی نمونے کی تشکیل کا کام شروع ہو چکا تھا اور لکھنؤ کے ہانپتے ہوئے کلچر کی آنکھیں اس نئے اور تیز سورج کے سامنے چندھیا رہی تھیں۔ میر انیس اس ثقافتی صدمے سے [illegible] احساس کمتری کا شکار نہ ہوئے، بلکہ وہ مسلمانوں کو ان کی عظمت رفتہ اور شجاعت عالیہ کا احساس دلانے کے لئے مرثیے کی رزم گاہ سجاتے ہیں اور اردو شاعری کو ایہام گوئی اور ظواہر حسن کی [illegible]

[illegible]

انہوں نے منتشر ہوتے ہوئے معاشرے کو خاندانی نظم اور رشتوں سے تقدس کا احساس دلایا۔ افراد خاندان میں [illegible] کا جس قدر پاس میر انیس کے مرثیوں میں نظر آتا ہے، کہیں اور نہیں ملتا۔ اس اعتبار سے میر انیس صرف عظیم مرثیہ گو ہی نہیں، بلکہ عظیم مصلح اور سماجی اخلاقیات کے [illegible] بھی ہیں کہ انہوں نے بدلتے ہوئے تہذیبی تناظر میں اہل ہند کے چند باقی اخلاقیات کو سنبھالے رکھنے کی کوشش کی۔ انہی میر انیس کے دو سو سالہ یوم ولادت کے حوالے سے مرثیہ فاؤنڈیشن پاکستان کے زیر اہتمام گزشتہ دنوں لاہور میں عالمی مجلس مذاکرہ کا انعقاد کیا گیا۔ اس مجلس مذاکرہ کی صدارت سابق نگران وزیر [illegible] ملک معراج خالد نے کی، جبکہ مہمانان خصوصی میں معروف سکالر ڈاکٹر تقی عابدی [illegible] (امریکہ) اور سید وحید الحسن ہاشمی شامل تھے۔

اس موقع پر مضمون پیش کرتے ہوئے [illegible] حسین نے ایک اہم نکتے کی طرف توجہ دلائی اور کہا کہ میر انیس کے مرثیوں کو بالعموم متقدمین [illegible] سے اور غزلوں کے لئے مقرر کردہ معیار نقد پر جانچا جاتا ہے جو درست نہیں ہے۔ انہوں نے کہا کہ میر انیس کے مرثیوں کو عالمی رزمیہ کے تناظر میں دیکھنے اور سمجھنے کی ضرورت ہے۔ مجلس مذاکرہ میں ڈاکٹر آغا سہیل کا مضمون پڑھ کر سنایا گیا، جس میں انہوں نے میر [illegible] کی شاعری میں عربی، فارسی [illegible] کی نشاندہی کرتے ہوئے انہیں [illegible] [illegible] مسافت شب آفتاب [illegible] تقی عابدی کی مخزن [illegible] کا اجرا بھی کیا گیا۔

[illegible] عبدالرحمن [illegible] "[illegible] چغتائی" اور اقبال اکیڈمی پاکستان کے زیر شائع کردہ "کلیات اقبال (فارسی)" کی اشاعت [illegible] ہی رہی کہ طباعت کے اعتبار سے کوئی خوبصورت کتاب دیکھنے کو ملے۔ "رہوار انیس" نے یہ خواہش پوری کی۔ بڑے سائز کے، 800 سے زائد صفحات پر مشتمل کتاب کی تزئین و آرائش قابل دید اور قابل صد [illegible] ہے۔ اس کے ایک ایک ورق سے وہ محبت اور [illegible] جھلکتی ہے جو ڈاکٹر تقی عابدی کے دل میں میر انیس کے لئے موجزن ہے۔ انہوں نے جس عرق ریزی اور باریکی سے "جب قطع کی مسافت شب آفتاب نے" کا جائزہ لیا ہے، وہ ان کے سائنٹیفک محقق ہونے کا عملی ثبوت ہے۔ اس جائزے میں مرثیے کی فصاحت و بلاغت اور [illegible] [illegible] انیس فہمی کے کئی نئے [illegible] ہوتے ہیں۔ ڈاکٹر عبدالرحمن عبد نے درست کہا کہ [illegible] میر انیس [illegible] زبان سے محبت نے انہیں تحقیق و تالیف کی طرف [illegible] مائل کیا کہ ان کی ذاتی لائبریری ہزاروں [illegible] قلمی نسخوں سے بھر گئی۔

اس موقع پر ڈاکٹر تقی عابدی نے تقریر کیا [illegible] معلومات کا ایک دریا بہا دیا۔ اتنا رواں بیان اور خوش [illegible] شخص میں نے کم ہی دیکھا ہے۔ خوبصورت ڈاکٹر تقی [illegible] آپ سے ملنے کے بعد احساس ہوا کہ حسن، عشق اور [illegible] جب یکجا ہو جائیں تو تقی عابدی جنم لیتا ہے۔ ☆

روزنامہ پاکستان لاہور

17 فروری 2003ء

Daily Times
Your right to know — A new voice for a new Pakistan

Sunday, May 04, 2008

Face of the Year

External Links
Upperhost.com
Best Web Hosting
Remove Security Tool
Freelance jobs
Breast Cancer Treatment is most effective in early stage
tirmizi is one of the top pakistan blogger

POSTCARD USA: Remembering Iqbal in Washington — Khalid Hasan

Dr Abidi said Urdu is becoming an "aural language" whereas it should be a language of the eyes. There are 600 million people in the world who understand Urdu but the Urdu script is slowly dying

Iqbal will have been dead exactly 70 years this year, but one tends to think of him in terms of the immediate rather than the distant, and he continues to be remembered with affection, but affection tinged with a sense of awe because of the tremendous power and sweep of his genius.

Faiz called him the "sweet-voiced wanderer who transformed wildernesses into living cities and abandoned taverns into halls of good cheer", whose "song lives, like a lamp that the blowing wind cannot put out, like a candle that lives on beyond the morning."

It was here in Washington the other day that Iqbal's memory was invoked at a small gathering, curtsey Abul Hasan Naghmi, Radio Pakistan Lahore's once famous Bhai Jan He had taken advantage of the presence in town of Syed Taqi Abidi, an Indian-Canadian physician, who has written a book on Iqbal's ailments based on his research, the poet's letters being the primary source.

Iqbal was not a well man, especially in his last years. Over the course of his life he suffered from one thing or another. Ironically, his genes were good though because there was longevity in his family. According to Dr Abidi, Iqbal should have lived at least for another 20 years. And had Iqbal been born in the latter part of the last century than in the latter part of the one before, modern medicine would not have let him die seven months short of his 61st birthday.

One thing is clear. Iqbal did not like doctors and, as he writes in one of his letters, he is like a child who hates to drink the bitter medicines that are given to him. He had little faith in allopathic medicine and much preferred the herbal and traditional kind. He was a great believer in the efficacy of what the famous Hakim Nabeena of Delhi, under whose treatment he remained for many years, prescribed. He also had himself seen by the celebrated Hakim Ajmal Khan.

But Iqbal's various ailments were beyond the ken of traditional healers and, as Dr Abidi shows, for over 30 years, those who attended on him included Dr Mathura Das of Lahore, Dr Abdul Basit of Bhopal, Dr Muhammad Yusuf, Dr Abdul Qayyum, Dr Jamiat Singh and Lahore's famous German physician Dr Seltzer.

Dr Abidi has gone through 1,450 of Iqbal's letters and found 251 of them descriptive of the various diseases and ailments that assailed him for a good part of his life, especially the final pain-filled years. Iqbal was a great believer in the development of traditional Islamic medicine and hoped that it would undergo some revolutionary change.

Dr Abidi, who has practised medicine for 30 years, is wonderstruck at the calm and confident way in which Iqbal received news of the presence of a tumour in his chest after an X-ray examination performed by one Dr Dick, a Lahore radiologist. A few hours after he was told, he wrote to Syed Nazir Niazi asking him to have a word with Hakim Nabeena. Two hours before his death, he refused to take an opium-based painkiller saying he did not wish to die in a half-conscious or unconscious state. Only a few hours before the end, Iqbal spent time discussing with the woman principal of an Islamic school in Lahore the best way to bring the message of the Quran to her students.

A list of Iqbal's ailments worked out by Dr Abidi makes chilling reading. A lesser man would have given up and succumbed to them much earlier. He

had heart and renal disease, gout, immature cataract, liver congestion, bronchial asthma, shortness of breath, laryngitis and oral problems that dogged him all his life. In the last two years, his voice kept getting progressively hoarse. And yet this titan packed more into his 60 years than it would take others centuries to even comprehend, much less express in undying verse and prose.

Dr Abidi is indeed a remarkable man. Married to an Iranian who does not speak a word of Urdu, as don't their children, he converses with them in Farsi, while he writes his books, of which there are many, in Urdu. Before Dr Abidi [illegible] the host Naghmi recalled that 30 years ago when he came to Washington, there weren't many in this town who were interested in Urdu. But an entire generation of Pakistanis had grown up here since, which was divided into two groups: one understood a bit of Urdu, while the other could speak Urdu but was unable to read it. They wrote Urdu in Roman letters.

If the practice grew, as it is likely to, we would be like Turkey where thousands of books written in the Arabic script lie in libraries with no readers. To that I can add that some of the more with-it of our Pakistani youth not only cannot read Urdu but are quite proud of it. I cannot help quoting Faiz, who once said that if you do not know your own language, you will remain ignorant of other languages too.

Dr Abidi said Urdu is becoming an "aural language" whereas it should be a language of the eyes. There are 500 million people in the world who understand Urdu but the Urdu script is slowly dying. In India, for instance, I can narrate from my own experience, that in the entire city of Lucknow, I could find only one sign in Urdu — and that too was a crumbling one which said that the place where it hung used to be the site of the famous Maktaba Nawal Kishore. I looked for a bookshop that would sell Urdu books but all I found was a small place with a couple of hundred used books that were coming apart.

Dr Abidi, to whom I return, described himself as "a physician by profession and a patient of the Urdu language by choice". He said on no other poet had more books been written than on Iqbal. He listed the number at 4,500, compared with Ghalib (1,500), Mir (350) and Anis (225). He also said that the largest number of commentaries on the Quran were to be found in Urdu.

Google

Web DailyTimes

Search

Dr Abidi said Iqbal smoked a huqqa for 35 years at least and in Europe he must have smoked cigarettes. He wasn't much for exercise and preferred to recline on a bed to read and converse. He was simple in his eating habits and would take whatever was brought to him. Once, the story goes, someone said to him, "Dr sahib, whenever I've had the pleasure of breaking bread with you, it is always cauliflower and meat. That must be your favourite dish." "Not really," Iqbal replied, "but that is all Ali Bux knows how to cook."

What a man!

Khalid Hasan is Daily Times' US-based correspondent. His e-mail is khasan2@cox.net

Home | Editorial

Share this story!

Daily Times - All Rights Reserved
Site developed and hosted by WorldCALL Internet Solutions

THE MILLI GAZETTE
Indian Muslims' Leading English Newspaper
32 pages, Twice a month. Subscribe Now.
Since 2000

Ads by Google
Conference
Urdu
Learn Urdu Language

Published in the 1-15 July 2005 print edition of MG; send me the print edition

International Urdu Conference in Toronto

By Ayub Khan

The Milli Gazette Online

Toronto: Urdu is not a threatened language but is alive and well, proclaimed Dr. Gopi Chand Narang, noted critic and president of Indian Academy of Letters, at a three day International Urdu Conference held in Toronto from June 17-19. He said that the organization of such conferences in North America proves that Urdu will continue to flourish in the future. He said Urdu should not be restricted to the Muslims alone but should be promoted as a universal language.

The conference, organized by the Urdu Times , was attended by well-known poets, writers, and journalists from India, Pakistan, UK, France, and Canada. Sessions were held on Literature and Modern Trends, Iqbal studies, Ghalib studies, Urdu Media's new challenges, Religious poetry, and Women's Urdu Literature.

Dr. Satya Pal Anand speaking at the Urdu Conference Also seen are poetess Mona Shahab, BBC Urdu broadcaster Raza Ali Abedi and Dr.Abdur Rahman Abd

Speaking at the conference Zahid Ali Khan, editor in chief of Siasat Daily, Hyderabad, said every year more than 50,000 students from Urdu schools drop out in the state of Andhra Pradesh alone never to return to studies. He said it is vital that the students remain in schools and that the schools' standards should be raised to meet modern challenges. He appealed to the attendees to sponsor at least one student in a year. Khalil ur Rahman, publisher of the New York based Urdu times, announced that he will sponsor the publication of quality Urdu works and that an international jury will select the submitted works.

The conference resolved that immediate measures need to be taken to protect the Urdu script in its present form. Dr. Taqi Abedi, convener of the conference, said the Perso-Arabic script is not the clothing but the skin itself of Urdu language and that no compromises should be made on it. The conference

AdChoices ▷

Moving Poetry
Feel the emotions of your soul Let the joy of life move you

International Conference
International Video/ Web/ Tele Conferences. Great Rates & Service.

Conference Abstracts
Collect and manage conference abstracts with an online system!

3.9¢ Conference Calling
No gimmicks, pay as you go, 800 toll-free, no hidden fees

Top 10 Web Conferencing
See Top Web Conferencing Service in Free Top Vendor Ranking Report.
Business-Software.com/Fre...

resolved to form an international committee to solve issues relating to the count of the Urdu alphabet and the teaching of Urdu in Sunday Islamic schools in North America. The attendees appealed to the Indian and Pakistani governments to ease travel restrictions on poets, writers and other literary figures.

The conference closed with a Mushaira attended by over 1500 people. Dr. Jamil Jalibi, Dr. Shan ul Haq Haqqi, Dr.David Matthews, Dr. Peerzada Qasim, Wakil Ansari, Mona Shahab and other national and international poets took part in it. Another International Urdu Conference is being held in Hyderabad this November. «

Subscribe to the PRINT edition NOW: Get the COMPLETE picture
32 tabloid pages choke-full of news, views & analysis on the Muslim scene in India & abroad...
Delivered at your doorstep, Twice a month

Latest Indian Muslim Islamic News

Books from India?
Now just a click away...
Click Now

Read, Recite Along, Memorise the Noble Quran with
DIGITAL ENCYCLOPEDIA

p.f.a.
design firm
passion & faith in architecture

WEALTH CREATION
THE SHARIAH WAY
IDAFA
Idafa Investments (P) Ltd

GOODWORD
Helping you build a family of faith

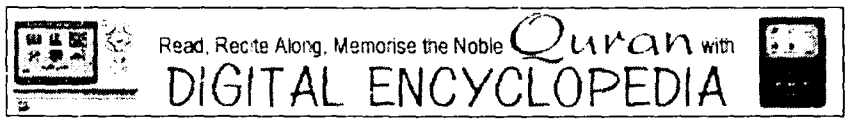

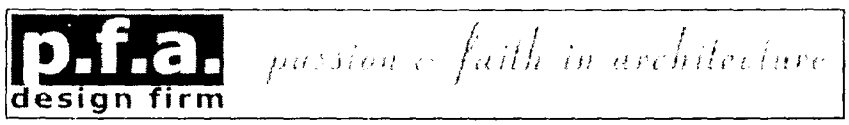

Pakistan Link

First Pakistani Newspaper on the Internet since 1994

Friday, October 21st, 2011

Community

Celebrating Faiz and Urdu in New York

By Qaisar Abbas

Dr. Gopi Chand Narang and Muneeza Hashmi are seen launching Dr. Taqi Abedi's book "Faiz Fehmi"

Celebrating Faiz Ahmed Faiz and the Urdu language in New York is a rarity which actually materialized as part of the 5 th Almi Urdu Conference that devoted a whole day to this legendary Urdu poet, his work and his life. The colorful activities also included a book launching, presentations of research papers, two musical performances and an international mushaira.

The conference itself was a grand meeting of the known Urdu writers, poets and scholars from all over the world including India, Pakistan, England, Canada and the United States who came to Long Island , New York for a three day conference, June 24-26.

Dr. Gopi Chand Narang from India and Faiz's daughter Muneeza Hashmi, along with two known poets from Pakistan Amjad Islam Amjad and Anwar Masood, were the chief guests. Two scholars, David Mathews and Naomi Lazard, came all the way from England to talk about Faiz and emerging issues in Urdu literature. Ali Ahmed Fatemi, Sadiq Naqvi and Shahid Mahli, the noted Urdu writers from India also participated in the conference.

Muneeza Hashmi and Dr. Gopi Chand Narang launched Dr. Taqi Abedi's extraordinary new book "Faiz Fehmi" published in Lahore. The voluminous book of over 1400 pages includes numerous chapters on the poetry and life of the poet, photographs and Sadaqian's paintings on his poetry.

Scholars and writers presented papers on Faiz and his poetry on the first day and discussed issues of journalism and Urdu the next day of the conference. Dr. Narang was very hopeful of the future of Urdu as a thriving language. He said despite politics the language will be flourishing on both sides of the border in India and Pakistan.

Muneeza Hashmi introduced the newly established "Faiz Ghar" in Lahore in a short documentary. The Ghar, she said, established with an objective to continue the poet's legacy and thoughts, is becoming a center for literary, artistic and peace activities. To her, this is the only way we can respond to increasing extremism in our society.

Dr. David Mathews stressed the need for more research work, publications and serious discussions on Faiz and the rich Urdu literature. Despite the claim that Ghalib and Faiz are international poets there is not much material available on these poets in English, he added.

Dr. Qaisar Abbas from the University of North Texas in his paper "Faiz and the Youth Revolution in the Middle East" analyzed the youth movements in these countries and their ideological relevance to the poet's dream of a free and vibrant society. He said, Faiz as a revolutionary poet, was against dictatorship and his poetry reflects his strong belief in the

شریف اکیڈمی کا فیض احمد فیض ایوارڈ

ممتاز محقق، شاعر اور دانشور

ڈاکٹر تقی عابدی کو دیا جائے گا

ڈائریکٹر میڈیا شریف اکیڈمی جرمنی اور APNA انٹرنیشنل فرینکفرٹ کے مطابق [illegible] اکیڈمی جرمنی کے زیر اہتمام اور تعاون سے فیض احمد فیض کے صد سالہ جشن ولادت کے سلسلے میں جہاں پروگرام منعقد کیے گئے ہیں فیض کے پیغام کو عام کرنے کیلیے پرنٹ میڈیا اور الیکٹرانک میڈیا کے ذریعے دنیا کے کونے کونے تک پہنچایا گیا۔ وہاں فیض احمد فیض ایوارڈ کا بھی اعلان کیا گیا۔ فیض احمد فیض کے فن اور شخصیت پر امسال متعدد کتابیں منصۂ شہود پر آئیں۔ تاہم شریف اکیڈمی کے بورڈ آف ڈائریکٹرز نے ڈاکٹر سید تقی عابدی کی کتاب ''فیض فہمی'' کو فیض ایوارڈ کا حقدار [illegible]۔

''فیض فہمی'' ایک ضخیم کتاب ہے جو 1300 سے زائد صفحات پر مشتمل ہے۔ اس کتاب میں 162 مضامین کے ذریعے فیض کی شخصیت، شاعری، اور نثری تخلیقات کا ہر زاویہ نظر سے جائزہ لیا گیا ہے۔ جس میں 50 سے زائد مضامین ڈاکٹر تقی عابدی نے لکھے۔ کتاب کے پیچھے مشہور آرٹسٹ ایم۔ ایف حسین کی قلم سے بنائی ہوئی 1976 کی تصویر چمڑے کی جلد پر پرنٹ کی گئی ہے۔ اس کتاب کی خوبی یہ ہے کہ اس میں فیض کا غیر مدوّن کلام بھی موجود ہے۔ جو ان کے کلیات میں شامل نہیں۔

شفیق مراد نے بورڈ آف ڈائریکٹرز کے فیصلے پر خوشی کا اظہار کیا اور ڈاکٹر تقی عابدی کو مبارکباد پیش کی۔ ڈائریکٹر برائے پاکستان ولائت احمد فاروقی نے میڈیا سے بات چیت کرتے ہوئے بتلایا کہ یہ ایوارڈ پاکستان میں منعقد ہونے والے اکیڈمی کے سالانہ پروگرام میں دیا جائے گا۔ جس میں شفیق مراد بہ نفسِ نفیس شرکت کریں گے۔ انہوں نے امید ظاہر کی کہ اکیڈمی کی ڈائریکٹر ویلز مسرت ناہید پروگرام میں شرکت کے لیے تشریف لائیں گی۔

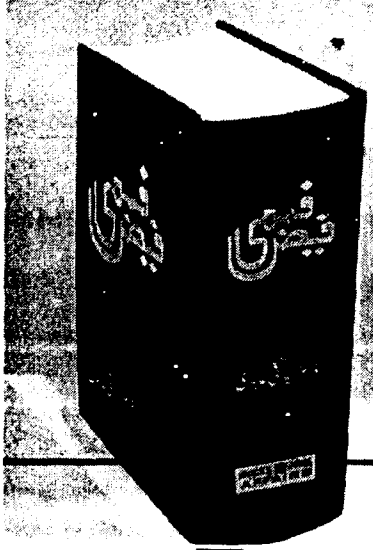

HAJI SHARIF AHMAD EDUCATIONAL & LITERARY ACADEMY
GERMANY

نیویارک میں ڈاکٹر تقی عابدی کی شاہکار تصنیف "تجزیہ یادگار انیس" کی پذیرائی

خصوصی رپورٹ

گزشتہ ہفتہ معصومین سکول نیویارک میں ایک خوبصورت محفل پذیرائی منعقد کی گئی جس کی صدارت نیویارک کی مشہور ادبی شخصیات اور تجزیہ کار وکیل جناب ساجد جعفری نے کی۔ ڈاکٹر تقی عابدی مصنف یادگار تجزیہ اس تقریب کے مہمان خصوصی تھے۔ اس تقریب پذیرائی میں نیویارک کے عملی اور شعری حلقوں سے تعلق رکھنے والوں کی ایک بڑی تعداد موجود تھی۔ تقریب کا افتتاح جناب سعید کی تلاوت کلام پاک سے ہو جس کے بعد جناب احتشام نقوی اور ساتھیوں نے انیس کے شاہکار مرثیہ "جب قطع کی مسافت شب آفتاب نے" کے چند بندوں کی سوز خوانی کے ساتھ پیش کیا۔ ناظم جلسہ آغا جعفری جو معصومین سکول کے چیئرمین بھی ہیں خطبہ نظامت میں ڈاکٹر تقی عابدی کی کتاب کی افادیت اور ان کی ادبی خدمات پر روشنی ڈال اور صدر ساجد جعفری مہمان خصوصی ڈاکٹر تقی عابدی اور مہمان اعزازی خلیل الرحمان کے ساتھ حجت الاسلام مولانا تلیمذ حجت الاسلام مولانا شیخ سرور اور آسٹین سے آئے ہوئے مہمان ڈاکٹر حسن اختر کو اسٹیج پر آنے کی دعوت دی۔ نیویارک کے اہل علم خاندان سے وابستہ کالم نگار اور صحافی احتشام کاظمی نے ایک پر مغز اور خوبصورت مقالہ پیش کیا جو ان کے خاص انداز بیان کے ساتھ ساتھ تجزیہ پر ایک ادبی دستاویز کی کیفیت کا حامل تھا۔ انہوں نے ڈاکٹر تقی عابدی کی تصنیف کو ان کا عظیم کارنامہ قرار دیا جس نے انیس امر کر دیا۔ نیویارک کے شاعر، صحافی اور کالم نگار جناب نسیم اختر نے ایک مفصل گفتگو کی اور تجزیہ کے کئی اہم حصوں پر روشنی ڈالی۔ انہوں نے تجزیہ کو علامہ شبلی کے موازنہ انیس و دبیر کے بعد سب سے عظیم تصنیف قرار دیا۔ انہوں نے کہا کہ اس کتاب میں مغربی طرز کے استفادہ اور تمام تجزیات اور لفظ بندی کی تحلیل و تشریح موجود ہے جو آج تک اس طریقے پر نہیں کی گئی تھی یہ ڈاکٹر عابدی کی معجز بیانی ہے اور یہ ان کا شاہکار ہے۔ نیویارک کے صحافی، شاعر اور کالم نویس واصف حسین نے صنف مرثیہ پر روشنی ڈالتے ہوئے تجزیہ کو ایک بالکل مختلف ادبی شاہکار بتایا جس سے مدتوں اردو شعر و ادب کو مدد ملتی رہے گی۔ کتاب میں میر انیس کی عظمت فن اور ان کے کلام

☆ انیس کی شاعری اردو شعر و ادب کی رونق، پروفیسر سید ناظر حسین زیدی

☆ انیس کی شاعری اردو شعر و ادب کی رونق، پروفیسر سید ناظر حسین زیدی

☆ علامہ شبلی کے موازنہ انیس و دبیر کے بعد تجزیہ دوسری عظیم تصنیف۔ نسیم اختر

☆ تجزیہ یادگار انیس ایک کامیاب ادبی تجربہ، واصف حسین

تجزیہ۔ تقی عابدی کی ادبی خدمات کی روشن دلیل، وکیل انصاری

☆ آغا شوکت جعفری چیئرمین معصومین اسلامک سکول نے نظامت کی

کے محاسن کی نشان دہی انیسیات کے طالب علموں کے لئے ایک نعمت ہے۔ حجت الاسلام مولانا تلیمذ الحسنین صاحب جو ممتاز خطیب اور عالم دین ہونے کے ساتھ ساتھ ماہر انیسیات شمار کئے جاتے ہیں نے تقی عابدی کی شخصیت اور ادبی خدمات کا اعتراف کرتے ہوئے انیس کے کلام پر ایک خوبصورت گفتگو کی اور تجزیہ کو اس صدی کی ضرورت بتائی جس سے انیس شناسی کے لئے نئے دروازے کھلے ہیں۔ ممتاز کالم نگار اور شاعر وکیل انصاری نے تقی عابدی کے اس عظیم کارنامے پر مبارک باد پیش کرتے ہوئے تجزیہ پر ایک عمدہ گفتگو کی اور کہا کہ صاحب تصنیف ڈاکٹر عابدی اپنی مصروف زندگی میں اپنا ہر لمحہ ادب کی خدمت اور اردو شعر و ادب کے گیسو پریشان کو سنوارنے میں صرف کر دیئے ہیں۔ جناب خورشید رضا زیدی جو انیسیات کے ماہر اور وسیع مطالعہ کے حامل ہیں اس کتاب کے مختلف گوشوں پر عالمانہ گفتگو کر کے اس کام کو معجز بیانی بتایا۔ نیویارک کے مشہور طبیب ڈاکٹر مصور مرزا نے صاحب تصنیف کے اس کام کو قلمی جہاد بتایا اور تجزیہ کو مرثیے کا امام باڑوں سے باہر عوام تک رسائی کا مثبت قدم بتایا۔ اردو ٹائمز کے مدیر اعلیٰ خلیل الرحمان نے محفل کی خوب صورتی اور تقی عابدی کے ادبی خدمات کو سراہا اور بتایا کہ صرف یہی کتاب نہیں بلکہ تقی عابدی 15 سال سے اردو ٹائمز میں خصوصی ادبی مضامین لکھ کر شمالی امریکہ میں اردو کی خدمات انجام دے رہے ہیں۔ ڈاکٹر ناظر زیدی سابق پروفیسر اردو، فارسی پنجاب یونیورسٹی نے کلام انیس پر مفصل روشنی ڈالی اور اپنے خاص انداز میں ثابت کیا کہ اردو شاعری کی رونق انیس کے کلام سے باقی ہے اور انیس کے ساتھ ناانصافی اردو ادب پر ظلم ہے۔

آسٹین سے تشریف لائے ہوئے مہمان ڈاکٹر حسن اختر نے عابدی صاحب کی عرق ریزی اور گراں تصنیف کو اردو ادب کی خوش بختی بتایا۔ تقریب میں جناب محسن نقوی صاحب مدیر کمیونٹی نیوز جو ماہ انیسات بھی شمار کئے جاتے ہیں انگریزی اور اردو میں تقی عابدی کی اس شاہکار تصنیف کی تعریف کرتے ہوئے اپنے خاص لہجہ میں کلام انیس پر روشنی ڈالی اور سامعین کو محظوظ کیا۔ اس تقریب میں آغا طاہر بھائی نے بھی کلام انیس اور تصنیف پر مثبت گفتگو کی۔

محفل کے مہمان خصوصی ڈاکٹر سید تقی عابدی نے تجزیہ یادگار انیس جو اب عالمی شہرت کی حامل ہے انیس کے فن کی عظمت اور ان کی چار پانچ سالہ محنت کا صلہ بتایا۔ انہوں نے کہا تجزیہ ایک نیا ادبی تجربہ ہے جس میں مغربی طرز کی تنقید اور فارسی کی جھلک نمایاں ہے۔ اس تجزیہ کی خاص بات یہ ہے کہ اس میں ہر شعر کو اکائی جان کر، پھر ہر بند کو پورے مرثیہ کو اکائی جان کر اس کی تشریح کی گئی ہے جس کی وجہ سے اس میں Three Dimention view سہ بعدی نکات کا مطالعہ ہوا ہے۔ میر انیس کے صرف ایک مرثیہ میں علم بیان کے محاسن، علم بدیع کے صنائع، روزمرہ محاورات ڈھائی ہزار سے زیادہ ہیں جسے جدول اور اشعار کے مقابل بتایا گیا ہے۔ تشبیہات کی 42 قسمیں اور ان کے امثال صرف ایک ہی مرثیہ سے دیے گئے ہیں ڈاکٹر عابدی نے بتایا اگر میر انیس کے صرف ایک مرثیے میں اتنی قدرت اور خوبصورتی موجود ہے تو ان کے 213 مراثی 113 سلام اور 586 رباعیات میں کس قدر اردو ادب کے ارتقا کی ضمانت موجود ہے اس کا اندازہ لگایا جا سکتا ہے اس لئے میر انیس کو اردو کے ارتقا اور بقا کے لئے لازم بتایا۔ جناب صدارت نے خطبہ صدارت میں تقی عابدی کی محنت اور کوششوں کو سراہا اور انیس کو اردو کا غذائے سخن بتایا۔ اس طرح یہ تقریب عشائیہ پر اختتام پذیر ہوئی۔

The Siasat Daily SAT 11-02-2006

چدمبرم کی G-8 وزارتی کانفرنس میں شرکت

آج بیرونی ممالک کے وزرائے خارجہ سے ناشتے پر تبادلہ خیال

ماسکو 10 فروری (پی ٹی آئی) مرکزی وزیر فینانس پی چدمبرم دنیا کے 8 مالدارترین ملکوں کے گروپ جی 8 کے وزارتی اجلاس میں روس کے دارالحکومت ماسکو میں کل شرکت کریں گے۔ توقع ہے کہ چدمبرم کل ایک روزہ دورہ پر علی الصبح ماسکو پہنچ جائیں گے اور ایرپورٹ سے سیدھے نیشنل ہوٹل جائیں گے جو قصر کریملن کے روبرو واقع ہے۔ ہندوستان کے وزیر فینانس یہاں پر ناشتے کے دوران برطانیہ، کینیڈا، فرانس، جرمنی، اٹلی، جاپان، روس اور امریکہ کے وزرائے فینانس سے ملاقات کریں گے۔ چین، برازیل اور جنوبی افریقہ کو اس کانفرنس میں شرکت کے لئے مدعو کیا گیا ہے۔ جی 8 کے باری باری سے صدر بننے والے ممالک میں سے ایک روس نے جو فی الحال جی 8 کا صدر ہے وزارتی کانفرنس میں شرکت کے لئے ہندوستان کو بھی مدعو کیا ہے۔ چین کی نمائندگی نائب وزیر فینانس چین کریں گے۔ ناشتے کی ملاقات کے دوران عالمی معیشت میں ان ممالک کے کردار اور تجارت کے موضوع پر ہانگ کانگ میں عالمی تنظیم تجارت کی کانفرنس کے نتیجہ پر دوحہ مذاکرات کے پس منظر میں تبادلہ خیال کیا جائے گا۔ وزیر فینانس روس الیکسی کڈرن نے کہا کہ یہ ملاقات بہت کارآمد رہے گی۔ دریں اثناء مقامی ذرائع ابلاغ نے نوٹ کیا کہ حالانکہ روس جی 8 کا موجودہ صدر ہے لیکن وہ معاشی کلب کا مکمل رکن نہیں بنے گا۔

اس اجلاس میں شرکت کرنے والے ممالک کو جی 7 اور روس کہا جائے گا۔ جی 8 کے وزرائے فینانس کے ماسکو اجلاس میں روس، ہندوستان اور چین کے ساتھ جو ابھرتی ہوئی معیشتیں ہیں نشستوں میں شامل ہوگا۔ بارسوخ روزنامہ کومرسینٹ نے کہا کہ روس صرف جی 8 گروپ میں شامل ایک ملک ہے جس نے ہنوز عالمی تنظیم تجارت میں شرکت اختیار نہیں کی ہے۔ اس کی قومی کرنسی پوری طرح قابل تبدیل ہے جس کی وجہ سے قومی سرحدوں کے پار سرمایہ آزادانہ طور پر منتقل کیا جاسکتا ہے۔ کل ایک پریس کانفرنس سے خطاب کرتے ہوئے کڈرن نے اعلان کیا تھا کہ یکم جنوری 2007ء تک روسی روبل پوری طرح قابل تبدیلی ہوگا اور سرمایہ کی منتقلی، سرمایہ کاری اور نفع کی بحالی کی آزادانہ نقل و حرکت پر عائد تحدیدات برخاست کردی جائیں گی تاکہ ماسکو جی 8 کے معاشی معاملات میں پوری طرح شرکت کرسکے۔

مرکزی کابینہ نے صدر جمہوریہ کے خطاب کی توثیق کی

نئی دہلی 10/ فروری (یو این آئی) مرکزی کابینہ نے آج اپنے ایک اجلاس میں صدر جمہوریہ کے پارلیمنٹ کے مشترکہ اجلاس سے خطاب کرنے کی توثیق کی۔ مذکورہ اجلاس 16 فروری کو ہوگا۔ واضح رہے کہ صدر جمہوریہ کے خطاب کے ساتھ ہی 16 فروری کو پارلیمنٹ کے بجٹ اجلاس کا آغاز ہوگا۔

آثار قدیمہ کی مساجد میں نماز کی اجازت کا مطالبہ: مفتی مکرم

نئی دہلی 10/ فروری (فیکس) شاہی امام مسجد فتح پوری دہلی مفتی محمد مکرم احمد نے آج نماز جمعہ سے قبل مسلمانوں کو مخاطب کرتے ہوئے ٹورزم وزارت، وزیر اعظم منموہن سنگھ اور اتر پردیش کے وزیر اعلی ملائم سنگھ یادو سے اپیل کی کہ آگرہ میں تاج محل مسجد یا قلعہ کی مسجد میں جمعہ کے دن کوئی ٹکٹ نہ لگایا جائے اور مسلمانوں کو نماز ادا کرنے کی اجازت دی جائے، جیسے پہلے سے چلی آرہی ہے، وہ ہر حالت میں برقرار رکھنی چاہئے۔ انھوں نے کہا کہ مسلمانوں کو ہر مسجد میں نماز کی اجازت ہونی چاہئے، چاہے وہ آثار قدیمہ کے تحت آنے والی مساجد ہوں۔

UNION PUBLIC SERVICE COMMISSI

Applications on prescribed form are invited by **2nd March, 2006 (09th March, 2006** in respect of applications receive from candidates residing in Assam, Meghalaya, Arunachal Pradesh, Mizoram, Manipur, Nagaland, Tripura, Sikkim, Jammu Spiti districts and Pangi sub-division of Chamba district of Himachal Pradesh, A & N Islands or Lakshadweep or abroad). emoluments excluding HRA & CCA) & upper age limits immediately follow name of the post. The date for determining eligi every respect shall be the normal closing date prescribed for receipt of applications viz. **02. 03. 2006.**

ENVIRONMENT & FORESTS MINISTRY

1. One Tech Offcr (Forestry) Gr II. [Resvd exclusively for PH (Orthopaedically Handicapped - one Leg) candidates belonging to any category]. Rs. 6500-10500/- (T.E. Rs. 11,797/- p.m). 30 yrs. **EQ: A. Edu :** Master's deg in Stats or Operations res or Eco with Stats or Commerce with Stats or Maths with Stats or Agri with Stats or eqv. **B. Exp.** 3 yrs' exp in collection / compilation / analysis of data in Agri/Forestry.

COMPANY AFFAIRS MINISTRY

2. Three posts in Senior Time Scale Gr (Registrar of Companies/ Dy Registrar of Companies/Deputy Dir (Inspection)/Dy Dir (Tech) (STS) in Accounts Br of ICLS. (1 post resvd for OBC). Rs. 10000-13500 (T.E. Rs.18150). 40 yrs. **EQ : A. Edu.** A qual recog for enrolment in the Register of members of the Inst of CA of India or of the Instt of C&WAI or Membership of the ICSI or eqv. OR Master's deg in Com with Advanced Accountancy or Management Accountancy or Financial Accountancy or eqv. **B. Exp.** 4 yrs' exp in a Commercial or Industrial Orgn or in a Govt. Deptt connected with the admn of the Companies Act, 1956.

CONSUMER AFFAIRS, FOOD AND PUBLIC DISTRIBUTION MINISTRY

3. One Scientist "SB" (Chemical), D/o of Consumer Affairs. (Resvd for ST). Rs.8000-13500/- (T.E. Rs. 14520/-). 40 yrs. **EQ : A. Edu.** Master's Deg in Chemistry (Pure/Applied/Industrial) or deg in Chemical Engg/Chemical Techno or eqv. **B. Exp.** 3 yrs' exp of Chemical analysis of Organic/Inorganic/Allied materials in a recog lab preferably using modern instrumental methods of analysis.

CULTURE MINISTRY

4. One Asstt Lib & Information Offcr (Computer) in National Lib, Kolkata. [illegible]

& Communication Engg/Techno or eqv. ii) 1C Industry/Res, out of which 5 yrs must be at th eqv. OR B. Candidates from Industry/Professic Electronics & Communication Engg/Techno and which is significant and can be recognised as with 10 yrs Industrial/Professional exp, out of w be at a Sr level comparable to that of an As eligible. NOTE : If a Class/Division is not awarde Tech/eqv deg, a minimum of 60% marks in aggre equivalent to 1st Class/Div. If a grade point syster will be converted to eqv marks and minimum CG scale of 10.

10. Two Asstt Profs (Electronics & Comr AIT under DTTE. (1 post resvd for OBC) (T.E. Rs. 21780). 50 yrs. **EQ : Edu. A.** i) Pb at Bachelor's or Master's level in Electronics & Techno or eqv. ii) 3 yrs exp in Teaching /Indus lecturer/or eqv. OR B. i) 1st Cl deg at Master's Communication Engg/Techno or eqv ii) 5 yrs' exp i at the level of Lecturer or eqv. Such candidate w Ph. D deg within a period of 7 yrs from the date c Prof OR C. Candidates from Industry / Profession w Degree/First Class Master's deg in Electronics & Techno or eqv and Professional work which is recognised as equivalent to Ph.D deg and with 5 yrs exp would also be eligible. NOTE : If a Class/D at BE/B.Tech, ME/M Tech/eqv deg, a minimum of 6 shall be considered equivalent to 1st class/Div. I is adopted the CGPA will be converted to eqv mar shall be 6.75 in the scale of 10.